साहित्य सृजन की अनमोल धरोहर

सर्व संभाव्यते त्वयि

उपलब्धि

तुममें सब संभव है !

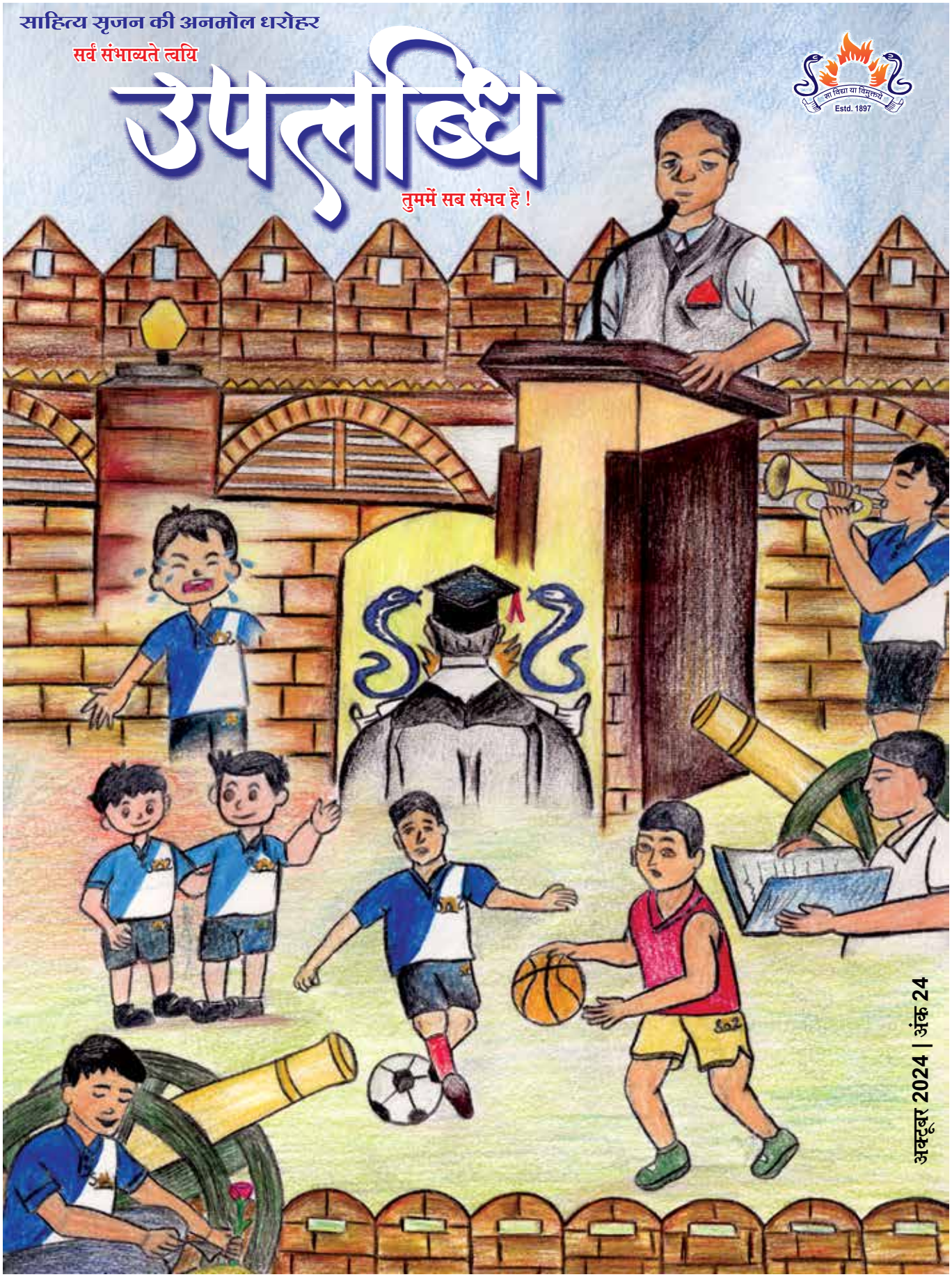

अक्टूबर 2024 | अंक 24

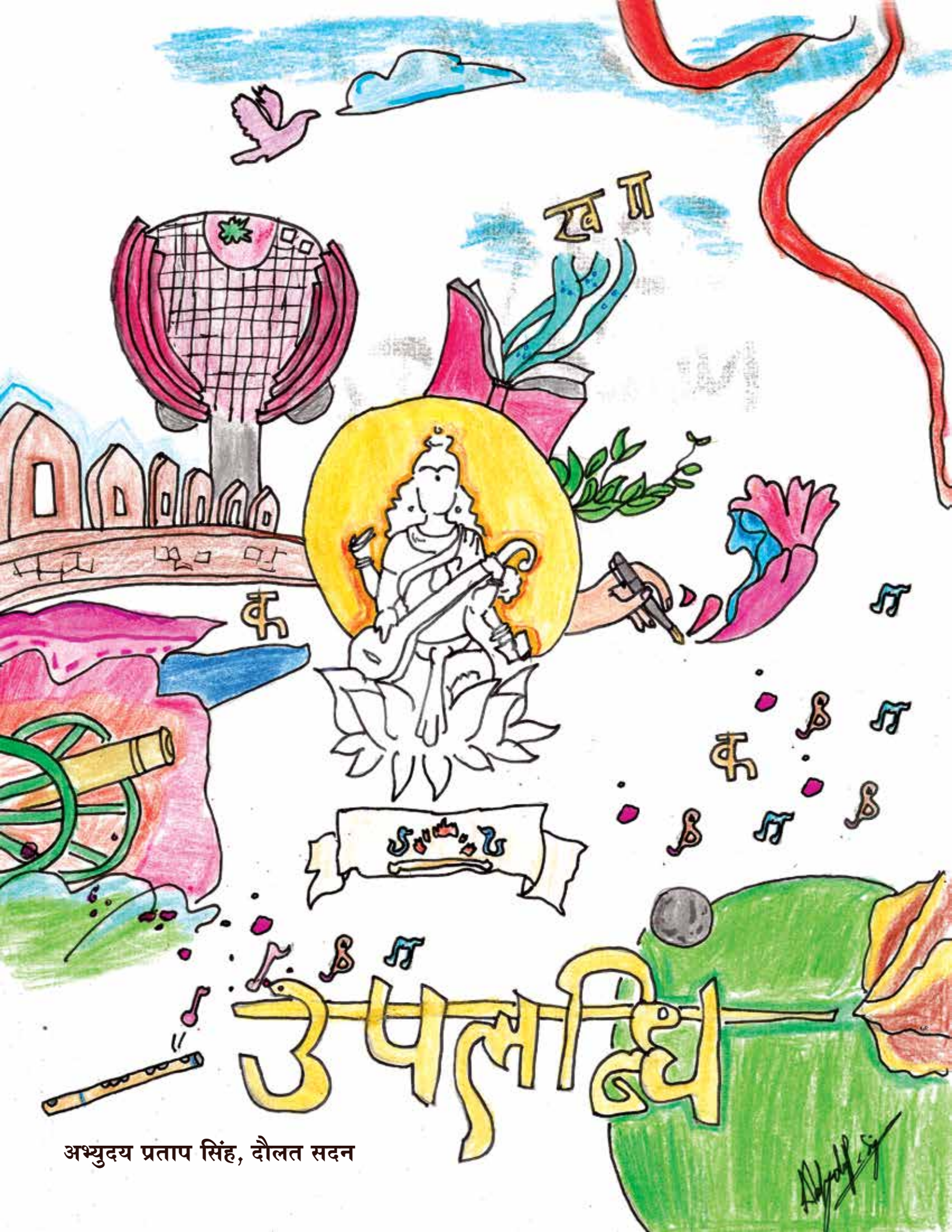

अभ्युदय प्रताप सिंह, दौलत सदन

संपादकीय–

प्रेरणा भीतर है!

सर्वं संभाव्यते त्वयि । तुममें सब संभव है !

मोको कहाँ ढूँढे रे बन्दे? मैं तो तेरे पास में! कबीर ने उन्हें कहा है जो प्रभु को बाहर दुनिया में खोज रहे हैं। आप छात्रगण भी जीवन में कोई बड़ी उपलब्धि पाने के लिए अक्सर तरह-तरह के वीडियो देखते हैं, या दुनिया के बड़े-बड़े लोगों की बातों पर अमल करने की कोशिश करते हैं। अपनी पढ़ाई की डैस्क के सामने प्रेरक कथन और तस्वीरें लगाते हैं। सेमिनार, कार्यशाला में शिरकत करते हैं। आपस में देर रात तक चर्चा करते रहते हैं। उन बातों को अमल में लाने पर जब कठिनाइयाँ आती हैं, तब आसपास की परिस्थिति या अड़चन को दोष देने लगते हैं। नाच न जाने आँगन टेढ़ा! क्या कभी भीतर के मन से बात की ? कोई बड़ी उपलब्धि हासिल करने की बात आई तो क्या भीतरी मन की रज़ामंदी ली?

कोई भी उपलब्धि तब तक उपलब्ध नहीं होती, जब तक कि वह आकांक्षा अंतस में न जन्म ले। जब बाहरी और भीतरी मन एकरूप हो जाता है, तब असंभव भी संभावना ग्रहण कर लेता है। आपका देखा सपना सामने साकार होने लगता है। आत्मबल से ही आत्मविश्वास प्रबल होता है। आत्मविश्वास से ही विपरीत परिस्थितियाँ आपकी ओर झुकने लगती हैं। आपको आभास होने लगता है कि आपके प्रयास सफल होंगे। आशातीत सफलता से आप अपनी क्षमता एवं योग्यता से अधिक प्रयास कर गुजरते हैं। और एक दिन आप अपने सपने को जी पाते हैं!!

तो फिर हो जाइए तैयार!! आपके अध्यापक इस बार आपको मिलवाएँगे आपके अपने अंतस से। वे बतायेंगे कि कैसे भीतरी अंतस को राजी किया जाये वो सब पाने, जो आपने सोचा है, अपने लिये!!

जयते साहित्य! जयते सिंधिया!

संरक्षक
श्री अजय सिंह (प्राचार्य)

विभागाध्यक्ष
श्री मनोज कुमार मिश्रा

संपादक
श्री गणपत स्वरूप पाठक

मुख्य संपादक - विवेक शर्मा
कार्यकारी संपादक - खुश तोड़ी
सह संपादक - स्वरित वार्ष्णेय
छायांकन - अविरल डालमिया
जूनियर संपादक - इंद्रांत मेहरोत्र
जूनियर संपादक - भावनी जैन
आवरण - खुश तोड़ी
साक्षात्कार - सिमरजोत सिंह, क्रिषित शर्मा
रचनात्मक सहयोग - श्री त्रिदिब देव चौधरी
श्रीमती ईशानी राय चौधरी
संपादन सहयोग - श्रीमती रक्षा सीरिया
श्री जगदीश जोशी
श्रीमती ऋतु स्वामी
श्री अमित कुमार
छायांकन - श्री हसरत अली

प्रकाशक
सिंधिया स्कूल, दुर्ग ग्वालियर-४७४००८

मुद्रक
गैलैक्सी प्रिन्टर्स, ग्वालियर मो. ९८२६२१४६४४

अपने सुझाव एवं रचनाएँ हमसे साझा करें :-
ईमेल : uplabdhi@scindia.edu

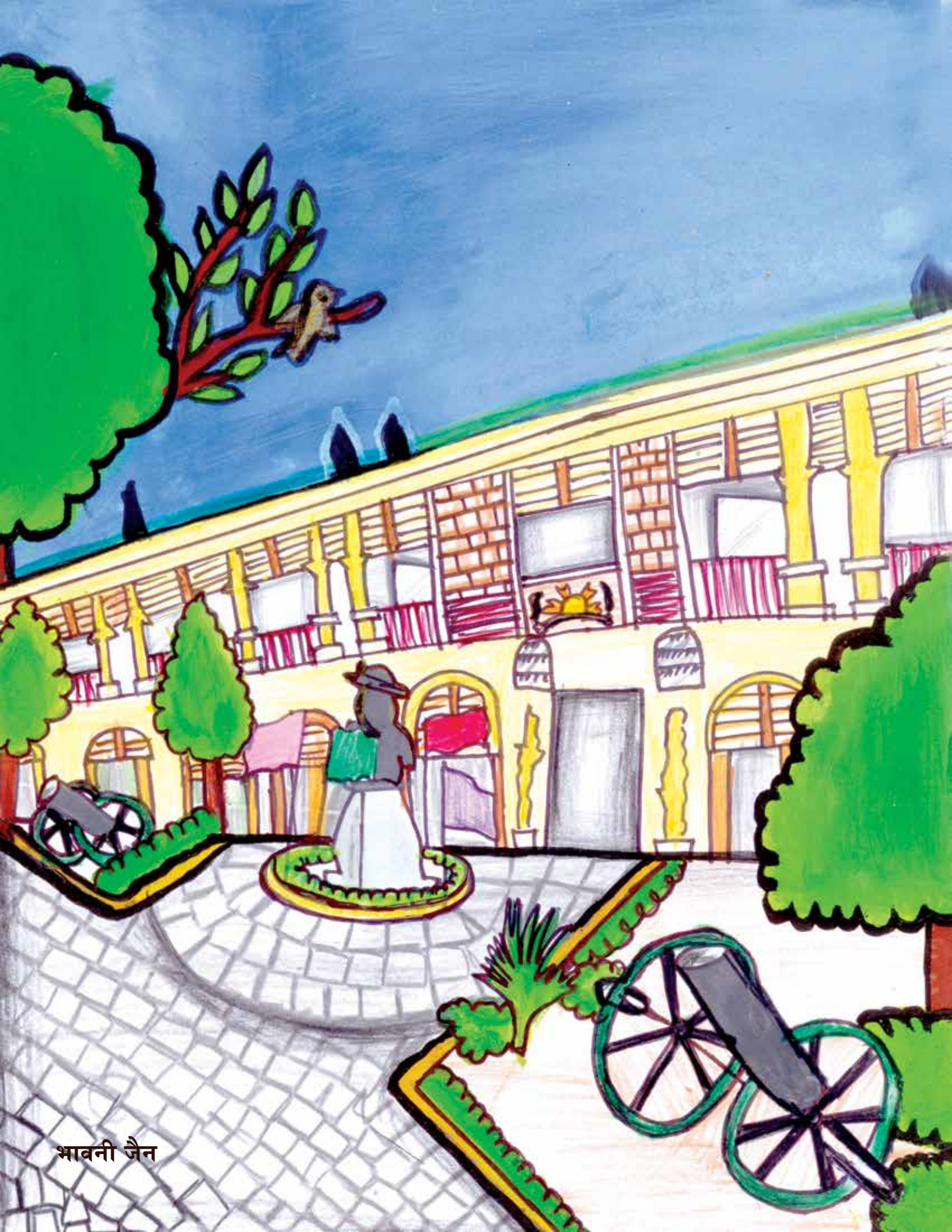

भावनी जैन

०१.	संदेश	१-६
०२.	किताबें करती हैं बातें	७
०३.	हिरोशिमा की कहानी	८
०४.	माइम कथा	९
०५.	हमारे कर्णधार	११
०६.	सही मार्ग शक्ति	१३
०७.	साहित्य और प्रकृति	१४
०८.	बच्चों का प्रिय शगल	१५
०९.	कविताएँ	१८
१०.	संस्कृत वाणी	२०
११.	साक्षात्कार : यानिस - लिली	२७
१२.	देश ने रतन खो दिया	२९
१३.	यह किला है हमको प्यारा	३१
१४.	मेरा विद्यालय	३३
१५.	मेरी जर्मन यात्रा	३६
१६.	साक्षात्कार : जस्टिस भाटिया	३७
१७.	ग्रीष्मकालीन ग्रहकार्य	४६
१८.	हिन्दी साहित्य सभा के कार्यक्रम	४७
	लेख, रिपोर्ट, कहानियाँ, कविताएँ	
	कक्षाओं के किस्से, व्यंग्य-चित्र, तस्वीरें आदि	

प्रेरणास्रोत

श्री अजय सिंह, प्राचार्य

प्रिय छात्रो!

जब हम सफलता के पंखों पर सवार प्रशंसा और सुख की हवा ले रहे होते हैं, तब हमें संसार में किसी से कोई शिकायत नहीं होती। बल्कि हमें किसी का दुख उसके और कर्मो का हिसाब दिखता है, मगर जब सवाल हमारी मुसीबतों का होता है तो हम चीख-पुकार करने लगते हैं- हे ईश्वर! तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?

एक कहानी है! यह एक सच्ची कहानी है, प्रसिद्ध अश्वेत खिलाड़ी आर्थर आशे की। ये वो पहला अश्वेत खिलाड़ी था, जिसने यू. एस. ओपन, ऑस्ट्रेलियन ओपन एवं विम्बल्डन जैसे प्रतिष्ठित टैनिस खिताब अपने नाम किये। सन १९८३ में, हृदय के इलाज के समय उन्हें रक्त चढ़ाना पड़ा। दुर्योग से, यह रक्त एड्स के विषाणु से संक्रमित था। दुर्भाग्य से, वह भी उस लाइलाज बीमारी से संक्रमित हो गया।

दुनियाभर से प्रशंसकों ने ढेरों पत्र भेजे और अपनी संवेदना एवं सहानुभूति व्यक्त की। अनेक लोगों ने उनसे मिलकर उन्हें दिलासा दी। ऐसे ही एक प्रशंसक ने उन्हें गहरे दुख के साथ कहा, "ऐसे घृणित रोग के लिए, ईश्वर ने तुम्हें ही क्यों चुना?"

तब बड़ी शांति से आर्थर आशे ने उत्तर दिया।

विश्वभर में लगभग ५ करोड़ बालक टैनिस खेल खेलना शुरू करते हैं, तो उनमें से लगभग ५० लाख सीख पाते हैं। लगभग ५ लाख बालक अच्छे खिलाड़ी बन पाते हैं। उनमें से लगभग ५० हजार खिलाड़ी सर्किट में जगह बनाते हैं, जहाँ उन्हें एटीपी रैंकिंग मिलती है। लगभग ५ हजार खिलाड़ी ग्रैण्डस्लैम के खिताब के करीब पहुँच पाते हैं। नामी खिताब विम्बल्डन में केवल ५० खिलाड़ी जा पाते हैं, और ४ सेमीफाइनल खेल पाते हैं। सिर्फ दो खिलाड़ी फाइनल मुकाबला खेलने का सौभाग्य पाते हैं। जब मैं फाइनल मुकाबला जीतकर विम्बल्डन-कप हाथ में लिये था, तब मैंने ईश्वर से कभी प्रश्न नहीं किया कि ये कप मुझे ही क्यों मिला? तो आज इस कष्ट में मुझे ये प्रश्न नहीं करना चाहिए, कि मैं ही क्यों?

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

प्रसन्नता आपको मधुर बनाये रखती है। विषम परिस्थितियाँ आपको मजबूत बनाती हैं। मन का विषाद (दुख) आपको मानवीय बनाता है। असफलता से आप विनयशील होते हैं। सफलता आपको चमका देती है, मगर स्मरण रखो ये आस्था और दृष्टिकोण आपका मार्ग सुगम बना देते हैं।

छात्रो! आप आनेवाले समय में सिंधिया स्कूल के ध्वज को अपने-अपने नगर और समाज में ले जायेंगे और यहाँ प्राप्त शिक्षा एवं संस्कार को देश में प्रसारित करेंगे; इसलिए आप हमारे लिए मूल्यवान हो।

आपमें से कुछ अपने कार्य या व्यवहार में बहुत अधिक सफल नहीं हो पाते हैं, और असफलता का ठीकरा परिस्थितियों पर फोड़ देते हो! नहीं, ये ठीक नहीं है। हर वस्तु, स्थिति, समय और लोगों का मूल्य समझिये। एक प्रसिद्ध उद्योगपति थे, जे.आर.डी. टाटा। उनका एक मित्र था। एक बार उस मित्र से मिलने पहुँचे। मित्र ने अपनी समस्या साझा करते हुए कहा- मैं अक्सर अपने काम की वस्तुएँ भूल जाता हूँ। मैं अपना चश्मा रखकर भूल जाता हूँ। कई बार खराब स्थिति बन जाती। तब, जे.आर.डी. टाटा ने उस मित्र को एक पैन (लेखनी) देते हुए कहा, "ये लो! ये एक बहुत मूल्यवान पैन है। इसे भूलना नहीं, सँभालकर रखना।" मित्र ने उस उपहार को बड़ी सावधानी से रखा। ऐसे बहुत समय बीत गया किसी और दिन जे.आर.डी. टाटा से मिलने पर, उसने बड़े उत्साह से ये बात कही, "देखिये! मैंने आपका दिया उपहार खोया नहीं!" इस पर जे.आर.डी. टाटा ने बड़ी शालीनता से कहा, "आप जिस वस्तु का मूल्य समझोगे, उसे कभी खो ही नहीं सकते!!"

छात्रो! मुझे आशा है कि आप अपने जीवन में अपनों का मूल्य समझेंगे, पहचानेंगे और अपने जीवन में उन्हें सँजोये रखेंगे।

आप सभी को १२७वें संस्थापना दिवस की हार्दिक बधाई!!

(जैसा कि प्राचार्य ने २० अगस्त की प्रार्थना-सभा में छात्रों को सुमार्ग पर चलने का प्रेरणा-संदेश दिया)

मार्गदर्शन

सुश्री स्मिता चतुर्वेदी, उप प्राचार्या

प्रिय छात्रो!

हमारी "मातृभाषा" हमारे विचारों और संस्कारों का दर्पण है। वही हमारी उन्नति का आधार है। आप सदैव अपनी "जड़" से जुड़े रहो। यह विचार आपको जीवन में निरंतर अग्रसर करता रहेगा।

आपसे मैं अपेक्षा रखती हूँ कि दत्तचित्त होकर अपने काम को अंजाम दो और सदैव अपने 'आत्म-चित्त' को जीवंत बनाये रखो। अपनी सामर्थ्य से बढ़कर काम करने की कोशिश करते रहो। आज यदि ८० प्रतिशत कर पाये तो अगली बार ८५ प्रतिशत तक अंजाम देने की भरसक कोशिश करो। जैसे-जैसे हम अपने को आगे धकेलते हैं, वैसे-वैसे हम आगे बढ़ते जाते हैं। ये बात हमें समझने में बहुत समय लगता है कि हमें अपनी सामर्थ्य का अंदाज़ा भी नहीं होता। कई बार लोग जीवनभर अपनी क्षमताओं से अनजान रहते हैं और अपनी उपलब्धि से स्वयं आश्चर्य में पड़ जाते हैं।

जब भी आप मेरे पास किसी समस्या या मार्गदर्शन के लिए आते हैं तो मैं आपके भीतर अवस्थित आपकी आंतरिक शक्ति को जागृत करने का प्रयास करती हूँ ताकि आप अपनी शंकाओं व समस्याओं के स्वयं समाधान खोज सको। मैंने स्वयं अपना जीवन "आत्मबल" से जिया है, तो मेरी कोशिश यही रहती है कि आपमें से हर एक को यही सिखाऊँ। एक बात और! जितना व्यक्ति सहनशील होता है, उतना ही वह सामर्थ्यशाली नायक एवं पथ-प्रदर्शक होता है। ये बात कई प्रकार से छात्रों को समझाई और मैंने छात्रों को समस्याओं की भँवर से उबरते देखा।

मेरा उद्देश्य है कि किसी भी प्रकार आपकी चिंता दूर कर सकूँ! आपके लक्ष्य और प्रयासों के बीच के विघ्न को मिटा सकूँ। आपको सावधानी, धैर्य एवं मुश्किल की घड़ी में भी उपयुक्त शब्द-चयन करके बोलने की आदत सिखा सकूँ!

आप सभी को शुभकामनाएँ!

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

प्रोत्साहन

श्री धीरेन्द्र शर्मा, अधिष्ठाता (शैक्षणिक एवं साँस्कृतिक गतिविधि)

प्रिय छात्रो!

मुझे बड़ी प्रसन्नता है, यह कहते हुए कि आपने इस बार उपलब्धि की सृजन प्रक्रिया में बढ़-चढ़कर भाग लिया है। आपने अपनी विषयवस्तु को बहुत सोच-समझकर लिखा और प्रकाशन को लेकर बड़ा उत्साह दिखाया। आशा है सम्पादक-मण्डल ने आपकी रचनाओं को महत्त्व दिया होगा।

उपलब्धि के प्रकाशन के दौरान आपने ये बात जान ली होगी कि किताबी ज्ञान तभी तक महत्त्वपूर्ण है, जब तक कि आप उसे अमल में ला रहे हैं।

जब आप अधूरी कविता या कहानी को पूर्ण करने की कोशिश कर रहे होते हो और आपको उचित शब्द ध्यान में नहीं आ रहे होते हैं, तब आपके मन में क्या-क्या विचार आते हैं? कभी गौर किया? आप अपने मन के भीतर चलने वाले विचारों को कभी सुन सके? दरअसल, उस समय आपको किताबी ज्ञान की बहुत आवश्यकता पड़ती है। यही समय होता है, जब आप यह बात सीख सकोगे। सही मायने में हम सीखते तब हैं, जब हम उस ज्ञान का व्यवहार में प्रयोग करते हैं।

अत: आपसे मेरी अपेक्षा यह है कि आगे बढ़कर, किसी भी गतिविधि में भाग लो और कुछ करके सीखो। अवसरों की हमारे विद्यालय में कोई कमी नहीं है।

इसी के साथ मैं आप सभी का अभिनंदन करता हूँ और संस्थापना दिवस की हार्दिक बधाई देता हूँ।

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

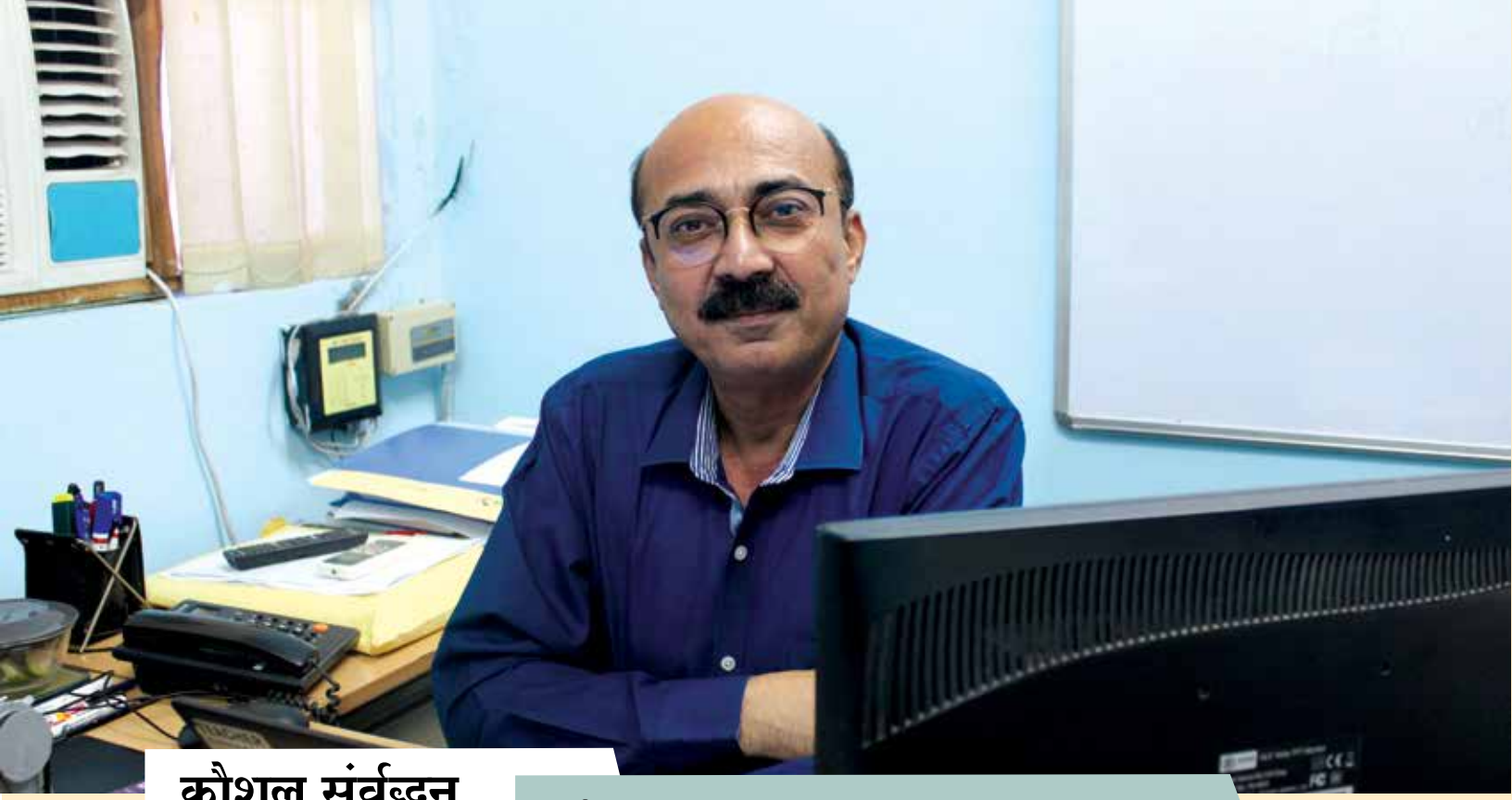

कौशल संवर्द्धन

श्री राज कुमार कपूर, डीन-आईसीटी

छात्रो!

आज कालचक्र का आरा इंगित कर रहा है, मनुष्य-मेधा की उपज, कंप्यूटरजनित-बुद्धिमता के नए युग आगमन की ओर! जब आपसे मिलता हूँ और आपकी कार्य-परियोजनाओं पर नजर डालता हूँ तो और भी यकीन हो जाता है कि हमारा विद्यालय फिर एक बार "कंप्यूटरजनित-बुद्धिमत्ता" के क्षेत्र में भारतवर्ष का नेतृत्व करेगा।

अभी हाल ही में हमने एक वृहद कार्यशाला का आयोजन किया था जिसमें शिक्षा में इस कृत्रिम-बुद्धिमता' के रचनात्मक अनुप्रयोग से शिक्षण को रोचक और प्रभावी बनाया जा सकेगा। इस कार्यशाला के माध्यम से ChatGPT, PerpleÛity, Magic School, Questionwell-org, Adobe Creator, Bypass-hiÛ-ai, Spinbot, Murf-ai, Fliki, Gamma-app और Durable-ai जैसे अधिकरणों का व्यावहारिक व सशक्त अनुप्रयोग समझाया गया। ये ए-आई अधिकरण न केवल शिक्षकों को पाठ योजना और सामग्री निर्माण करने में मदद करते है, बल्कि यह छात्रों की मन:स्थिति तक पहुँचकर उनकी समझ बढ़ाते हैं। साथ ही विद्यार्थियों को अध्ययन और स्वाध्याय में बड़े सहायक होते हैं।

ChatGPT इनपुट के आधार पर मानव-समान बातें उत्पन्न करता है। PerpleÛity एक AI टूल है जो विशाल डेटा सेट और जानकारी के स्रोतों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देता है। PerpleÛity कठिन विषयों को सरल शब्दों में समझाने में मदद कर सकता है, जो विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों या कठिन विषयों के लिए उपयोगी है। Magic School एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा संचालित मंच है जो शिक्षण कार्यप्रणाली को स्वचालित और बेहतर बनाने में शिक्षकों को मदद करता है। Questionwell-org उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक आकलन और क्विज उत्पन्न करने में मदद करता है। Adobe Creator टूल्स में Adobe Photoshop, Illustrator, Premiere, और अन्य शामिल हैं, जिनमें सामग्री निर्माण के लिए AI-सक्षम क्षमताएँ हैं। आधुनिक डिजिटल साक्षरता मानकों के अनुसार मल्टीमीडिया परियोजनाएँ बनाने में यह अधिकरण आपका सहायक मित्रा है।

आज भाषा को समृद्ध और व्यापक बनाने में कंप्यूटर तकनीक और आगे बढ़ गई है। आप जैसे होनहार छात्रों के कारण यह आगे और विकास करेगी, ऐसी संभावना मैं व्यक्त करता हूँ आशा करता हूँ कि आप अपने रचनात्मक मस्तिष्क की उर्वरता से, कंप्यूटर-जनित मेधा को सदैव अपने अधीन रखकर मानवता को समृद्ध बनाते रहोगे।

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

''साहित्य हमें नए दृष्टिकोण, संस्कृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराता है।''

आज "उपलब्धि" अपने जीवन के चौबीसवें पड़ाव पर पूर्ण विश्वास व नए कलेवर के साथ खड़ी है, हिंदी विभाग द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका न केवल छात्रों की रचनात्मकता और साहित्यिक क्षमता को उजागर करने का एक मंच है, बल्कि यह हमारे विचारों और भावनाओं को साझा करने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है।

इस पत्रिका के माध्यम से, हम छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि वे अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करें और एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करें। यह केवल एक शैक्षिक प्रयास नहीं, बल्कि एक सामूहिक यात्रा है जिसमें हम सभी मिलकर अपनी सोच और रचनात्मकता का आदान-प्रदान करते हैं।

''उपलब्धि'' पत्रिका का यह अंक आपके लिए प्रेरणा और जानकारी का स्रोत बनेगा। हम सभी जानते हैं कि हम आपकी सोच और आपके विचारों को महत्व देते हैं। इस अंक में हम नवीनतम विषयों, प्रेरणादायक कहानियों और विचारशील लेखों को शामिल कर रहे हैं, जो न केवल ज्ञानवर्द्धक हैं, बल्कि आपके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में भी सहायक होंगे।

इसके लिए मैं हिंदी विभाग के अपने सभी सहयोगियों तथा विशेषकर इसके संपादक श्री गणपत स्वरूप पाठक,छात्र संपादक विवेक शर्मा, खुश टोडी तथा उन सभी छात्रें के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के संपादन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपके समर्थन और स्नेह के लिए धन्यवाद!

आइए, एक साथ मिलकर आगे बढ़ें और उपलब्धियों की नई ऊँचाइयों को छुएँ।

किताबें करती हैं बातें!

सफदर हाशमी की एक कविता है- किताबें करती हैं बातें! क्या-क्या बातें करती हैं किताबें? हर तरह की बातें करती हैं ये किताबें! किताबों की बातें जानने के लिए इनके दिल में झाँकना पड़ता है। एक बार ये संसार आपके लिए खुला तो समझिए दुनिया के सारे रहस्य आपने जान लिये! कुछ किताबों का विवरण यहाँ दे रही हूँ, जरा पढ़कर देखो! फिर मुझे बताना कि कैसा रहा किताबी दुनिया का संसार!!! - ***अजीता सिंह, कक्षा नौवीं, रानोजी सदन***

१. रामायण
रचनाकार - महर्षि वाल्मीकि

२. महाभारत
रचनाकार-महर्षि वेदव्यास

३. भगवद गीता:
रचनाकार-महर्षि वेदव्यास/ श्रीकृष्ण

४. विदुर नीति
रचनाकार-आचार्य विदुर

५. न्याय सूत्र
रचनाकार-महर्षि गौतम

६. वैराग्य शतक :
रचनाकार-राजा भर्तृहरि

८. पंचतंत्र
लेखक-आचार्य विष्णु शर्मा

९. सिंहासन बत्तीसी
रचयिता-वररुचि/नंदीश्वर

१०. अर्थशास्त्र
रचनाकार-चाणक्य

११. पृथ्वीराज रासो
कवि-चंदवरदायी

१२. राजतरंगिणी
रचनाकार-कवि कल्हण

१३. पद्मावत
कवि-मलिक मुहम्मद जायसी

१४. आल्हाखण्ड
कवि-जगनिक

१५. कुरल सप्तक
कवि-तिरु वल्लुवर

१६. द वॉन्ट एण्ड मीन्स ऑफ इण्डिया
लेखक-दादा भाई नैरोजी

१७. द ऑरिऑन
लेखक-लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

१८. १८५७ प्रथम स्वातंत्र्य समर
लेखक-विनायक दामोदर सावरकर

१९. रश्मिरथी
लेखक-रामधारी सिंह 'दिनकर'

२०. जेल डायरी
लेखक-सरदार भगतसिंह

२१. आजीवन कारावास के बारह वर्ष
लेखक- उल्लासकर दत

२२. द्वीपांतर कथा
लेखक - बारीन्द्र कुमार घोष

२३. द आर्कटिक होम इन द वेदाज
लेखक-लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

२४. मेरे सत्य के प्रयोग
लेखक-मोहनदास करमचंद गाँधी

२५. मधुशाला
कवि-हरिवंशराय बच्चन

२६. अग्नि की उड़ान
लेखक-अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम

२७. मेरा आजीवन कारावास
लेखक-विनायक दामोदर सावरकर

२८. लक्ष्य
लेखक- ब्रायन ट्रेसी

२९. शिखर पर मिलेंगे
लेखक-जिग जिगलर

३०. जीत आपकी
लेखक- शिव खेड़ा

३१. आप वास्तव में कौन हैं और क्या चाहते हैं
लेखक-शाद हेल्म्स टैटर

३२. अपने छुपे लीडर को कैसे जगाएँ
लेखक-जॉन सी मैक्सवैल

३३. संन्यासी जिसने अपनी संपत्ति बेच दी
लेखक-सर रॉबिन शर्मा

३४. अलकैमिस्ट
लेखक-पाओलो कोएलो

३५. बारहवीं फेल
लेखक-अनुराग पाठक

३६. प्लेइंग इट माइ वे
लेखक-सचिन तेंदुलकर

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

हिरोशिमा की कहानी: मेरे आँसुओं की जुबानी

"युद्ध तब शुरू होते हैं जब आप चाहें, लेकिन वे तब खत्म नहीं होते जब आप चाहें ....."

- निकोलो मैकियावेल

२६ मई २०२४ को २६ विद्यार्थियों और ३ अध्यापकों का दल 'उगते सूरज की धरती' जापान की यात्रा पर इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से रवाना हुआ। सभी के मन में जापान और वहाँ के लोगों को लेकर उत्साह और जिज्ञासा थी। यात्रा का हर पल आनंदमय बीत रहा था। बच्चे पूरे जोश में थे, और हम शिक्षक भी यात्रा का भरपूर आनंद ले रहे थे। जापानियों की ईमानदारी, अखंडता, और समय की पाबंदी के बारे में जितना सुना था, वहाँ जाकर अनुभव उससे कहीं अधिक गहरा और प्रेरणादायक था। बचपन से ही हिरोशिमा और नागासाकी के बारे में सुनते आए थे, इसलिए वहाँ जाने का निर्णय लिया।

२९ मई २०२४ की दोपहर में जब मैं हिरोशिमा पहुँचा, तो ६ अगस्त १९४५ की वह काली सुबह, जब मानवता के इतिहास में एक नया और भयानक अध्याय लिखा गया था, वह घटना ताजा हो गई। अभी भी उस समय के अवशेषों से रूह काँप उठती है, तो उस समय की दशा का आप केवल अनुमान ही लगा सकते हैं। हिरोशिमा का 'पीस मेमोरियल म्यूजियम' उस त्रासदी की सारी यादें सँजोए हुए है। यहाँ आने वाले लोग उस भयावह घटना के साक्षी बनते हैं। म्यूजियम में रखी तस्वीरें, अवशेष, और बचे हुए लोगों की कहानियाँ हमें उस दिन की भयावहता का अनुभव कराती हैं।

जब मैंने वहाँ की तस्वीरें देखीं, तो एक अजीब सा दुख मन में भर गया। यह दुख केवल विनाश और दर्द की कहानियों का नहीं था, बल्कि उस असीम पीड़ा का था, जिसे मानवता ने सहा होगा। तस्वीरों में वह झुलसी हुई ध रती, राख में तब्दील हो चुके मकान, बच्चों के खिलौनों के अवशेष, पुल के पिघले तथा मुड़े हुए गार्टर, और जलते हुए शरीरों की तस्वीरें, सब जैसे जीवंत हो उठे। इन तस्वीरों ने याद दिला दिया कि एक पल की हिंसा ने किस तरह एक पूरे शहर को खामोश कर दिया। इन तस्वीरों में लोगों की कराह, उनकी आँखों में बसे भय और अनकहे सवालों को आज भी महसूस किया जा सकता है। मैंने इस विनाशलीला के बारे में केवल सुना था, यह मेरा अनुभव था, लेकिन जब वहाँ जाकर हकीकत देखी, तो यह मेरी अनुभूति बन गई।

हिरोशिमा म्यूजियम ने मुझे केवल दुख की कहानियाँ नहीं बताई, बल्कि शांति, सहनशीलता, और अहिंसा का संदेश भी दिया। इसने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि युद्ध कभी भी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। इसका सबसे बड़ा प्रमाण थी वहाँ पर लगी शांति की प्रतिमाएँ, जो विश्व से हर तरह की हिंसा का अंत चाहती हैं। एक स्कूल के बच्चों द्वारा जिस प्रकार वहाँ प्रार्थना की जा रही थी, उससे मेरी आँखें नम हो गई। संदेश स्पष्ट था कि ये बच्चे इस विनाशलीला से किसी न किसी तरह से परिचित हैं और भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न होने की प्रार्थना कर रहे हैं।

इस स्थान पर मैं यह सोचने पर मजबूर हो गया कि क्यों हम उस स्थिति में पहुँचे, जब इंसान ने इंसान के खिलाफ इतने भयंकर हथियारों का प्रयोग किया। वहाँ की तस्वीरें हमें उस दर्द का एहसास कराती हैं और कहती हैं कि भविष्य में हमें ऐसी गलती को दोहराने से बचना चाहिए।

यह अभागा शहर हिरोशिमा आज फिर से एक जीवंत शहर है, जो आगे बढ़ने का प्रतीक है। म्यूजियम में प्रवेश करते समय उस दर्दनाक इतिहास की गहराई को महसूस करना, और फिर शहर के

बाहर नई पीढ़ियों की खिलखिलाहट सुनना मेरे लिए यह एक अद्भुत अनुभव था । यह हमें सिखाता है कि चाहे कितना भी बड़ा संकट क्यों न आ जाए, मानवता में आगे बढ़ने की शक्ति होनी चाहिए ।

लेकिन इन तस्वीरों ने मुझे यह भी याद दिलाया कि हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए। एक नए और बेहतर कल के लिए, हमें अपने इतिहास की गलतियों से सीखना जरूरी है। हिरोशिमा का दर्द हमें यह भी बताता है कि शांति की चाह को हर समय जिंदा रखना चाहिए, ताकि भविष्य में कोई और शहर इस तरह के विनाश का शिकार न बने। ***काश! रूस-यूक्रेन, इजराइल-हमास एक बार समय निकालकर हिरोशिमा चले जाते तो संभवतः अगले ही दिन शांति की घोषणा हो जाती।***

जगदीश जोशी
(हिंदी-विभाग)

माइम कथा : आइ विल नॉट टॉलरेट दिस!

(मसूरी इंटरनैशनल स्कूल द्वारा आयोजित अंतर्विद्यालयी सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित)

मंच के दोनों ओर से अभिनेता मंच पर आते हैं। आमने-सामने से गुजर जाते हैं। दायीं ओर से निकलकर, अपने काल्पनिक मित्र को दूर से हाथ हिलाकर अभिवादन करता है।

बाईं ओर से आने वाला दाईं ओर पहुँचकर, अपना बैग उतारकर अपनी काल्पनिक डैस्क पर बैठता है।

बायीं ओर पहुँच चुका अभिनेता अपना थैला रखकर, कागज की गेंद बनाकर काल्पनिक मित्र को फेंकता है, और उसे संकेत करता है कि मैंने नहीं फेंका।

दाईं ओर वाला किताब निकालकर, मन लगाकर पढ़ रहा है।

बाईं ओर वाला फिर कागज की गेंद फेंकने के फिराक में खुद फिसलकर गिर जाता है।

इस पर पृष्ठभूमि से बच्चों के खिलखिलाने की आवाज गूँजती है।

स्कूल की घण्टी बजती है। दाईं ओर वाला अपना बस्ता बाँधने लगता है।

इधर, बाईं ओर वाले को किसी अध्यापक ने देख लिया था, इसलिए उसे वे आकर थप्पड़ मारते हैं। थप्पड़ खाकर उदास, झुके कंधों से कक्षा के बाहर चल देता है।

उधर, दाईं ओर वाला, असावधानी के कारण डैस्क के पायदान से टकराकर गिरते-गिरते बचता है। फिर सीधे चलते-चलते काँच के दरवाजे से अपना सिर "धड़" से टकरा लेता है। और जैसे-तैसे बाहर निकलता है।

दोनों आमने-सामने आकर अपनी धुन में चलने के कारण टकरा जाते हैं। फिर, एक-दूसरे को हँसकर, अपना गम भुलाकर गले लगा लेते हैं। और फिर खुश होकर मित्रता प्रकट करने के लिए हाथ मिलाते हैं। एक हाथ जोर से झटकने से दूसरा गुलाटी खाकर गिर जाता है। दूसरा उसे सामने न पाकर इधर-उधर देखता है। फिर अपने पीछे पाता है। फिर हँसकर चल देते हैं।

फिर दोनों ओर से दो लोग तैश में एक-दूसरे की ओर लपककर आते हैं। एक-दूसरे को चाँटे मारते हैं, फिर मजाक से दोनों हाथों की मुट्ठियाँ मिलाते हैं, फिर बैठ जाते हैं। एक जेब से ड्रग निकालता है, दूसरा कागज और लाइटर। फिर तैयार करके सिगरेट पीने की जुगत करते हैं कि एक पुलिस मुजरिमों को पकड़ने की टोह में आता है। साइरन बजता है।

पुलिस पहले व्यक्ति को पकड़कर उठाती है और एक तरफ खड़े होने को कहती है। फिर दूसरे को खींचकर उसकी तलाशी लेने को होती है, उतने में पहला भागने को होता है। पुलिस दूसरे को वहीं छोड़कर, पहले को पकड़ने भागती है, तब तक दूसरा भाग जाता है। पुलिस दूसरे को भागते देखकर हैरान हो जाती है।

फिर मंच के दाईं ओर से एक व्यक्ति स्कूटर पर सवार होकर उसे स्टार्ट करता है। फिर वह स्कूटर चलाता हुआ, बाईं मंच तक आता है। यहाँ रुककर, दूसरे व्यक्ति को ड्रग की पुड़िया देता है। फिर स्कूटर स्टार्ट करके बाईं मंच के भीतरी सिरे तक जाता है, वहाँ फिर ड्रग बाँटता है। दूसरा व्यक्ति ड्रग लेकर बाईं मंच के बाहरी सिरे से आड़ी रेखा में, छुप-छुपाते जाता है।

इस दौरान पुलिस गहन तलाशी अभियान पूरे शहर में (मंच के बाईं भीतरी सिरे से दाईं ओर घूमकर) चला रही है।

स्कूटर वाला बाईं ओर मंच के भीतरी सिरे पर, स्कूटर खड़ा करके, आड़ी रेखा में दाईं ओर के बाहरी सिरे की ओर, चलते-चलते, चारों ओर नजर रखते हुए, किसी को ड्रग बाँटने आता है। पुलिस तलाशी अभियान करते-करते मंच के केंद्र में आती है। अपराधी और पुलिस एक-दूसरे की ओर पीठ करके गोलाकार चलते हैं। पुलिस झटके से अपराधी को बाजू से पकड़कर, उसकी गर्दन दबोच लेती है।

अपराधी पकड़े जाने पर, बहाना करता है, कि वह बेकसूर है-जेब से रुपए निकालकर दिखाता है कि आप रख लीजिए। जब तक पुलिस रुपये की गड्डी देखकर हैरान होती है, तब तक वह अपनी गर्दन छुड़ाकर भाग जाता है।

अब, पहले वाले दोनों मित्र मंच के विपरीत किनारों से आते हैं। दूसरा मित्र पहले को देखकर खुश हो जाता है, अपने दोनों हाथ फैला देता है गले मिलने के लिए।

मगर, पहला मित्र, दूसरे के पीछे आ रहे अन्य मित्र को देखकर खुश हो रहा होता है। वह अपने दूसरे मित्र की अनदेखी करके अन्य मित्र से गले मिलता है, खुश होता है।

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

दूसरा अपने हाथों को खुला रखे, अपनी अनदेखी पर दुखी हो जाता है। फिर छिपकर उनके कार्यकलाप देखता है।

अन्य मित्र को एक और मित्र जुड़ता है और ये मिलकर पहले को नशीली दवा सिगरेट में डालकर पिलाते हैं। पहला, पहले-पहल मना करता है। मगर बाकी दो उसे पिलाते हैं। एक बार खाँसी आती है। फोन रिंग बजती है। अन्य मित्र फोन पर बात करके जाता है। उसके पीछे बाकी दोनों चले जाते हैं। पहला अपनी सिगरेट वहीं रखकर चला जाता है।

दूसरा व्यक्ति ये अभिनय करके कि ये सिगरेट है, जिसके कारण बहुत से मित्र बन जाते हैं, आकर सिगरेट पीने लगता है। कश लेने पर वह गिरकर तड़पने लगता है।

पुलिस आती है, और उसको सँभालती है और उस मासूम की हालत देखकर बहुत आक्रोश में आ जाती है। उठकर गन का घोड़ा चढ़ाकर 'ड्रगबाज' को निशाना बनाकर, (दर्शकों की ओर) गोली दाग देती है।

अन्य कलाकार मंच पर पोस्टर लेकर आते हैं।

पुलिस के पास में बाईं ओर के कलाकार के हाथ में पोस्टर में लिखा है- आइ विल।

मासूम मित्र के ठीक पीछे तीन कलाकारों के हाथ में रखे पोस्टरों पर क्रमशः लिखा है- नॉट, टॉलरेट, दिस (उँगली दिखाता हाथ)!!!

संगीत के साथ कथा सम्पन्न होती है।

गणपत स्वरूप पाठक
हिन्दी-विभाग

प्रतिभागी कलाकार:

- ***श्रेयांश जैन (ड्रग डीलर)***
- ***नक्ष मन्ध्यानी***
- ***सागनिक चंदा (नशेबाज मित्र)***
- ***अक्षत सिंह (पुलिस)***
- ***अग्रिम प्रताप यादव (पहला मित्र)***
- ***अभिज्ञान सिंह राठौर (दूसरा मित्र)***

मार्गदर्शन :

- ***श्री राहुल भारद्वाज***
- ***श्री दीपांशु शर्मा***
- ***श्री गणपत स्वरूप***

वर्षों की भव्यता के आधार स्तम्भ

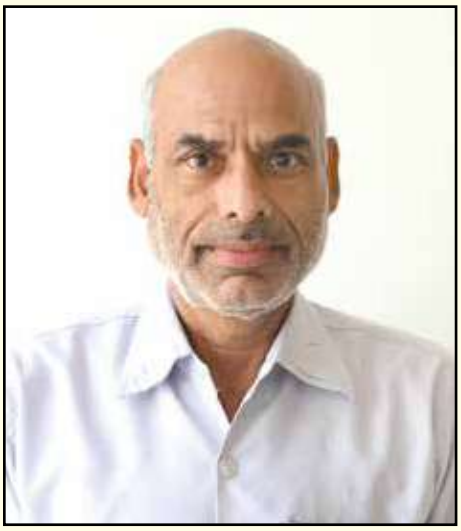

सुरेंद्र भैया

सुरेंद्र भैया का जन्म बनारस, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह विद्यालय से १९९६ से जुड़े हुए हैं। विद्यालय से पहले वह अपने घर पर ही रहते थे और कहीं नहीं जाते थे। उनके पिताजी की विद्यालय में जीवाजी सदन के ग्रह स्वामी लालेन्द्र कुमार जी से बात होती थी, तो कुमार जी ने सुरेंद्र भैया को यहाँ विद्यालय में बुलाया और तब से भैया इस विद्यालय में हैं। पहले वह जूनियर स्कूल में थे फिर जब प्रधानाचार्य ऐन. के. तिवारी आये, सन २००० के बाद भैया सीनियर में आ गए तब से वह परीक्षा कक्ष में शुरुआत से हैं। वह छात्रों से बने हैं, न कि उनसे छात्र। ऐसे ध ीरे-धीरे सिंधिया में छात्रों के साथ रहने के बाद भैया का मन लग गया मानो की भैया को छात्रों से स्नेह हो गया हो और कुछ साल बाद उन्होंने ग्वालियर में घर ले लिया। वह बेइमानी न करने के सिद्ध ांत में यकीन करते हैं। और कभी भी कोई छात्र या कोई अध्यापक उनके सामने से गुजरे तो हर समय उनके चेहरे पर मुस्कान रहती है। इसी लगाव के कारण वह अभी तक विद्यालय में हैं। वह अध्यापकों और छात्रों से मित्रता और सरल स्वाभाव रखते हैं। विद्यालय में छात्रों के माता-पिता नहीं हैं जिसके वजह से भैया को उनके साथ माता-पिता जैसा स्वभाव भी रखते हैं। वह हर गलत कार्य के लिए कठोर रहते हैं। अगर वह छात्र कोई गलत कार्य करे तो उस कार्य के कारण से उस छात्र का भविष्य खराब हो जाएगा। भैया कहते हैं कि फिर ऐसे महान विद्यालय में पढ़ने का क्या फायदा? कोशिश तो यह है कि छात्र कुछ बन कर जाएँ। यदि कोई छात्र बिगड़ रहा है तो वह उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वह उसे सुधारें।

-स्वरित वार्ष्णेय
कक्षा-ग्यारहवी, जयाजी सदन

रवि भैया

रविंद्र राय भैया, पर सब इन्हें रवि भैया कहते हैं। रवि भैया भी सुरेंद्र भैया के साथ १९९६ में विद्यालय में आये। जब से वह विद्यालय में है तब से उन्होंने यहाँ बहुत सारे बदलाव देखे हैं। उनमें से भी उन्हें छात्रों के स्वभाव का बदलाव बड़ा लगता है। वह कहते हैं कि पहले जैसे छात्रों में एक लिहाज, शिष्टाचार और लगन होती थी, वह अब के छात्रों में बची ही नहीं है। अब छात्र केवल मजे करने में और अध्यापकों को तंग करने में लगे रहते हैं। इसका ये भी कारण है कि आजकल के माता-पिता ने बच्चों को दण्ड देना बंद कर दिया है, जिसकी वजह से बच्चे सुनते नहीं हैं। भैया का एक सुझाव है कि छात्रों

में भय पैदा करना भी जरूरी है। जब तक भय नहीं होगा तब तक छात्रों में अनुशासनहीनता रहेगी। पिछले छात्र अध्यापकों से डरते थे। इसलिए छात्र भय के कारण बंक नहीं करते थे। पहले समय में जब बच्चन सिंह भाकुनी जी थे तब भाकुनी जी ने भैया के साथ-साथ और कई लोगों को समाज सेवा समिति में शामिल किया। इससे भैया को बहुत मदद हुई और तो और वह सोंसा गाँव में सेवा करने जाते थे। भैया की सोच है कि कार्य करना है तो जिम्मेदारी की राह पर चलकर करो।

-स्वरित वार्ष्णेय
कक्षा-ग्यारहवी, जयाजी सदन

नाथू भैया

हम सब के सदनों में कई महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं। उनमें से एक हैं, जिन्हें हम 'भैया' कहकर पुकारते हैं। यह वह व्यक्ति हैं, जो चाहे सुर्खियों में रहने वाले न हों, पर उनके काम बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं।

जयाजी सदन से पहले हम भी पहले

नीमाजी सदन के निवासी थे। इसी सदन के नाथू भैया के बारे में बताना चाहेंगे। नाथू भैया अपने कुल की तीसरी पीढ़ी हैं, जो सिंधिया स्कूल में सेवा कर रही हैं। उनसे पहले उनके दादाश्री चांटोक पाल ने ३२ वर्षों तक शिवाजी सदन की देखभाल की। उनके पिताश्री रम्पोक पाल ने वर्ष १९३६ से वर्ष १९६८ तक शिवाजी सदन की सेवा की। अब नाथू भैया स्कूल में २६ वर्षों से नीमाजी सदन में हैं। वे अहिल्या शिंदे महोदया के समय नीमाजी सदन में आये। वह दिनभर इधर-उधर घूम-फिरकर तरह-तरह के काम करते रहते हैं, ताकि हमें काम में आसानी हो।

नाथू भैया, बच्चों के साथ घुलमिल जाते हैं, ताकि उन बच्चों को घर की याद न आये। वह खेल में भी अच्छे हैं। उनको लगभग सारे स्पोर्ट्स खेलने आते हैं, इसलिए हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

वह हमेशा बच्चों को, उनके कार्य के प्रति प्रेरित करते आये हैं और आशा है कि नीमाजी में आने वाले छात्रों को भी प्रेरित करेंगे। इनकी सेवा और समर्पण को देखकर लगता है कि ये ही है आधारस्तम्भ जिस पर सिंधिया स्कूल के स्वर्णिम १२५ वर्षों की विरासत टिकी हुई है।

-अभिषेक अग्रवाल
कक्षा-नवमी, जयाजी सदन

माँ

माँ तू ही मेरा सब
माँ तू ही मेरा जग
टूटूँगा नहीं कभी
अटल-अविचल
खड़ा होना है अब
कभी न घबराना
अब मैं तेरा सहारा
तेरी एक मुस्कान पर

-सागनिक चंदा, दौलत सदन

बूझो तो जानें!

चार कोने, पर पाँव नहीं,
एक मुख, पर बोल नहीं।
दर्पण सा दिखाए सबको,
लेकिन खुद का रूप नहीं।

अपनों के ही घर ये जाये,
तीन अक्षर का नाम बताये,
शुरु के दो अति हो जाये,
अंतिम दो से तिथि बतायें!

आठ कलाएँ उसकी होतीं,
शीतल-चंचल, वर्ण धवल।
रातों का राजा है वो,
चाहे सरद हो, चाहे गरम।

-विवेक शर्मा, दौलत सदन

सही मार्ग की शक्ति

अभिनव अंशु एक लेखक होने के साथ-साथ राजनीति विज्ञान एवं इतिहास में विशेषज्ञता रखते हैं। उन्हें जटिल पाठों को सरल करके छात्रों को पढ़ाने का एक जुनून है। वह छात्रों में सीखने की ललक जगाते हैं और इस सीखने की प्रक्रिया को अनुभवजन्य बना देते हैं। लेखन, शोध, नवागत शिक्षण पद्धतियाँ, इतिहास विषय की विचारोत्तेजक विषयवस्तु, रचनात्मक परियोजनाओं के माध्यम से सुगम एवं प्रभावी बनाना, आपका कार्य-विस्तार है।

गाँव के एक छोटे से हिस्से में रहने वाला राजू नाम का लड़का राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिता की तैयारी कर रहा था । उसकी आँखों में बस एक ही सपना था, जीत का सपना। हर दिन वह मैदान पर घंटों तक प्रैक्टिस करता, लेकिन कहीं न कहीं उसके मन में एक शंका भी थी। जितनी कड़ी मेहनत वह कर रहा था, उतनी ही तेजी से उसे ये अहसास हो रहा था कि जीतना इतना आसान नहीं होगा ।

राजू के कुछ दोस्त उसे रास्ता दिखाने लगे, "राजू, जितनी मेहनत कर रहे हो, उससे कुछ नहीं होने वाला। आजकल तो जीतने के लिए शॉर्टकट लेना पड़ता है। तुम भी कोई छोटा रास्ता पकड़ लो, जैसे कुछ दवाइयाँ लेकर ताकत बढ़ा लो या खेल में किसी तरह से धाँधली कर लो । जीतने के लिए ये सब जरूरी है।"

राजू दुविधा में था। उसे जीतना तो था, लेकिन क्या इस तरह से जीतना सही होगा? मन के अंदर चल रही इस लड़ाई के बीच, एक दिन वह गाँव के मंदिर के पास बैठे बाबा जी से मिला। बाबा जी गाँव के सम्मानित बुजुर्ग थे और महात्मा गांधी के विचारों के अनुयायी थे। वह अक्सर गाँव के बच्चों को जीवन के सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते थे।

बाबा जी ने राजू के चेहरे की उलझन को भाँप लिया और उससे पूछा, "बेटा, क्या बात है ? कुछ परेशानी में दिख रहे हो।"

राजू ने धीरे-धीरे अपनी सारी बातें बाबाजी को बता दीं। उसने अपनी दुविधा को उनके सामने रख दिया, "बाबा जी, मेरे दोस्त कहते हैं कि जीतने के लिए शॉर्टकट लेना जरूरी है। अगर मैं मेहनत करता रहा तो शायद जीत न पाऊँ।"

बाबा जी मुस्कराए और बोले-

"बेटा, महात्मा गांधी ने हमेशा कहा कि साधन यानी रास्ता, उतना ही महत्वपूर्ण है जितना अंत यानी लक्ष्य। अगर रास्ता गलत होगा तो जीत भी अधूरी और खोखली होगी । गांधी जी का मानना था कि अगर हम सच्चाई और ईमानदारी से अपने काम को पूरा करें, तो भले ही परिणाम कैसा भी हो, हमारी आत्मा को शांति मिलती है।"

राजू ने उत्सुकता से पूछा-
"तो क्या हम गलत तरीके से अपना सही काम नहीं कर सकते, बाबा जी?"

बाबा जी ने जवाब दिया-

"अगर गाँधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम में हिंसा का रास्ता अपनाया होता, तो क्या हम आज गर्व से कह पाते कि हमने सच्चाई और अहिंसा से स्वतंत्रता प्राप्त की? सत्य और अहिंसा गांधी जी के मुख्य हथियार थे। उन्होंने कभी भी गलत साधनों का सहारा नहीं लिया, क्योंकि उनका मानना था कि गलत साधनों से प्राप्त की गई जीत भी एक हार के समान होती है।"

राजू की उलझन अब धीरे-धीरे दूर होने लगी थी। उसने बाबा जी से विदा ली और मन ही मन निर्णय कर लिया कि वह शॉर्टकट का रास्ता नहीं अपनाएगा, चाहे परिणाम कुछ भी हो।

प्रतियोगिता का दिन आ गया। राजू ने बिना किसी धोखाधड़ी के खेल में हिस्सा लिया। उसने पूरे जोश और ईमानदारी के साथ अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया । हालांकि वह पहला स्थान नहीं हासिल कर पाया, लेकिन उसे दिल से यह अहसास हो रहा था कि उसने जो किया, वह सही था। उसकी मेहनत और सच्चाई ने उसे एक अनमोल संतुष्टि दी थी।

जब प्रतियोगिता के परिणाम घोषित हुए, तो भले ही राजू जीत नहीं पाया, लेकिन उसके दिल में गर्व था। वह बाबा जी के पास फिर गया और उन्हें अपने अनुभव के बारे में बताया। बाबा जी ने उसके सिर पर हाथ रखा और कहा, "बेटा, सच्ची जीत वही होती है, जब हमारे साधन सही हों। परिणाम से ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि तुमने सच्चाई के रास्ते पर चलते हुए अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाए । यही महात्मा गांधी का मार्ग था, साधन की पवित्रता।"

राजू मुस्कराते हुए बोला-

"अब समझ में आया, बाबा जी। सही मार्ग ही सच्ची प्रेरणा है, और यही असली जीत है।"

संदेश: जीवन में सही साधन अपना कर चलना ही असली प्रेरणा है। महात्मा गाँधी का मानना था कि अगर साधन सही हों, तो परिणाम हमेशा मन को शांति देने वाला होता है। साधनों की पवित्रता ही सच्ची सफलता की ओर ले जाती है।

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

साहित्य और प्रकृति

रक्षा सीरिया
हिन्दी विभाग

साहित्य और प्रकृति के बीच एक अद्वितीय और गहरा संबंध है, जो केवल तभी समझ में आता है। जब हम खुद को प्रकृति के करीब पाते हैं, जैसे कि पर्वतारोहण या अन्य किसी प्राकृतिक स्थल पर यात्रा करते समय। प्रकृति की गोद में बिताए गए वे पल हमारे जीवन की अमूल्य धरोहर बन जाते हैं, क्योंकि यहाँ हमें प्राकृतिक सौंदर्य का साक्षात्कार होता है, जिसे शहरों के शोर-गुल और धुएँ में खो दिया गया है।

अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य का वर्णन किया है, जिसे हम इन विशेष स्थलों पर जाकर खुद महसूस कर सकते हैं। जब हम इन स्थलों पर पहुँचते हैं। तो साहित्यकारों की सौंदर्यात्मक अनुभूतियाँ हमारे सामने साकार हो उठती हैं और हम महसूस करते हैं कि उनकी लेखनी में छिपी गहरी समझ कितनी सटीक थी।

प्रकृति हमें आत्मावलोकन और अपने भीतर झाँकने का अवसर प्रदान करती है, यह हमें अपने अस्तित्व के वास्तविक अर्थों को समझाने की प्रेरणा देती है। इस विद्यालय से जुड़े होने के कारण हम भाग्यशाली हैं कि हर साल हम इन अद्भुत स्थालों पर समय बिता पाते हैं और इस प्रक्रिया में एक नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं, जो हमारे जीवन को सकारात्मक दिशा देती है। इसके लिए हमें किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं है, बस एक दृढ़ निश्चय और निर्णय की जरूरत है कि हम यह यात्रा करना चाहते हैं और हाँ, इसे अनुभव करना चाहते हैं।

मानव और प्रकृति का यह अटूट रिश्ता बनाए रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। वर्तमान पीढ़ी ही वह कड़ी है, जो इस रिश्ते को संजोकर रख सकती है। और भविष्य के लिए इसे सशक्त बना सकती है। हमें इसे समझना होगा और सह सुनिश्चित करना होगा कि साहित्य में प्रकृति के सौन्दर्य की यह धारा निरंतर बहती रहे, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसका आनंद उठा सकें।

बच्चों का प्रिय शगल : पेपर मैशे

मैं सिंधिया स्कूल, किला, ग्वालियर के पेपर मैशी विभाग में अध्ययनरत हूँ, इसमें बहुत आनन्द और कड़ी मेहनत है। इस विभाग में लगभग १५० बच्चे इस कला को सीखते हैं, हमने इसमें ५०० से अधिक मॉडल बनाए हैं। पेपर मैशी बनाना कठिन लेकिन आनन्दमय है, इसे बनाने में लगभग ढाई घंटे का समय लगता है।

कक्षा के शुरूआत मे सबसे पहले हमारे शिक्षक श्री वीरेंद्र सिंह नागवंशी हमें एक नेम प्लेट बनाने के लिए कहते हैं, इसे बनाने के लिए पहले हमें एक कॉईल बनाना होगा और इसे गोंद की मदद से बॉर्डर पर चिपकाना होगा, फिर हमें छोटे-छोटे कॉईल बनाना होगा और इसे आपके अक्षरों पर चिपकाना होगा, फिर हमें इसे पेंट करना होगा और यह हो गया नेमप्लेट तैयार।

फिर उन्होंने हमें एक पेन स्टैंड बनाना सिखाया, फिर कुछ और भी कलाकृतियाँ। सिंधिया स्कूल में भारत का सबसे अच्छा पेपर मैशी विभाग है और मुझे इस पर बहुत गर्व है, मुझे खुशी है कि मैं इसका हिस्सा हूं।

मुदित सर्राफ
सातवीं अ, जनकोजी सदन

जब पहली बार मैं पेपर मैशी विभाग में गया तो मेरी आंखों के सामने एक बड़ी सी मशीन थी, पानी से भरी इतनी बड़ी मशीन देखकर मैं हैरान रह गया। कक्षाओं के दौरान मुझे पता चला कि यह हौलेंडर बीटर है जिसमे रद्दी-पेपर को बारीक पीसकर लुगदी में परिवर्तित किया जाता है।

प्रशिक्षण के दौरान मैने जो सीखा, वह मै आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। पेपर मैशी बनाने के लिए कुछ बेकार कागज लें, इसे बहुत छोटे टुकड़ों में काट लें, इसे कुछ दिनों के लिए पानी में डुबो दें, कागज को कुछ दिनों के लिए भीगने दें और उसमे गोंद या फेविकॉल मिलाकर गूथ लें।

हर हफ्ते होने वाली इन कक्षाओं में मैंने अपना खुद का नेमप्लेट बनाया जिसमें अप्रत्याशित रूप से ३ सप्ताह लग गए लेकिन यह अच्छा लग रहा था और मेरे शिक्षक ने इसे बनाने में मेरी बहुत मदद की। पेपर मैशी दिलचस्प और सीखने लायक कला कौशल है।

अतुल्य कृष्णा
आठवीं, जनकोजी सदन

पेपर मैशी एक शिल्प तकनीक है, जिसमें विभिन्न वस्तुओं और मूर्तियों को बनाने के लिए चिपकने वाले पदार्थों

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

(गोंद या फेविकॉल) के साथ कागज या कागज की लुगदी का उपयोग किया जाता है। यह साँचे या ढाँचे पर कागज और चिपकने की परत चढ़ाकर हल्के और मजबूत आइटम तैयार करने की एक बहुमुखी और सुलभ विधि है।

हमारे सर के बताए अनुसार ''पेपर मैशी'' शब्द फ्रेंच से आया है, जिसका अर्थ है ''कुटा या पिसा हुआ कागज'', क्योंकि पेस्ट बनाने के लिए शुरू में कागज को मैश किया जाता था। इस तकनीक का उपयोग सदियों से सजावटी सामान, मुखौटे, थिएटर प्रॉप्स और मूर्तियां बनाने के लिए किया जाता रहा है।

हमारे सिंधिया स्कूल में भी पेपर मेशी विभाग है। पेपर मैशी विभाग के प्रमुख नागवंशी सर हैं। वह एक बहुत अच्छे शिक्षक हैं और हम सभी को हमारे प्रोजेक्ट पूरा करने में मदद करते हैं। मैंने पेपर मैशी और कागज की लुगदी से अपनी नेमप्लेट और मोर का एक मॉडल भी बनाया है। इन दोनों को सीखने और पूरा करने में मुझे लगभग १ महीने का समय लगा। मेरे लिए यह बहुत अच्छा अनुभव था क्योंकि मुझे कुछ नया और रोमांचक सीखने को मिला।

विवान पोददार
नौवीं ब, रानोजी सदन

इस बर्ष जब मैने स्कूल में प्रवेश लिया तो कला विभाग में मुझे एक बिषय चुनने को कहा गया, तब मैने पहली बार चिरकला, क्ले मॉडलिंग, मैटल वर्क, बुड वर्क के अलावा पेपर मैशी का नाम सुना। यह मेरे लिए एकदम नया अनुभव था, इसलिए मैने कला विकास हेतु पेपर मैशी कला माध्यम को चुना। दो महीने काम सीखने के बाद मैं यह कह सकता हूँ कि यह बहुत अच्छा विभाग है क्योंकि पेपर मैशी विभाग में आने से पहले मैं सिर्फ क्ले मॉडलिंग और पेंटिंग करता था। मैने यहां स्कूल से निकलने वाले खराब रद्दी-पेपर से अपने लिए पैन स्टैंड और एक शीनरी बनाई है।

अभय गर्ग
सातवीं स, कनेरखेड़ सदन

पेपर मैशी का मतलब एक ऐसी सामग्री है जो रद्दी-पेपर, गोंद और अन्य पदार्थों के मिश्रण से बनी होती है और सूखने पर कठोर हो जाती है। पेपर मैशी का उपयोग अक्सर सजावटी वस्तुओं को बनाने के लिए किया जाता है।

एक कलाकार के रूप में आप इसका उपयोग विभिन्न प्रकार की चीजें बनाने के लिए कर सकते हैं जैसेय कटोरे, बड़े 3-डी अक्षर और संख्याएँ, लालटेन, फूलदान, यहां तक कि कंगन और बड़े मोतियों जैसे मोटे आभूषण भी।

पेपर मैशी बहुत मजेदार है, क्योंकि इससे आप आसानी से काम कर सकते है। विभाग में नागवंशी सर पेपर मैशी सिखाने में हमारी बहुत मदद करते हैं। मैने २ महीने में पूरे २ मॉडल बनाए हैं।

क्रिशदीप सिद्धू
नौवी अ, महादजी सदन

मैं इस बर्ष हाल ही में पेपर मैशी कला विभाग में शामिल हुआ हूं, मैंने यहाँ अभी तक बहुत सी कलाकृतियाँ बनाई हैं। पेपर मैशी विभाग मेरे अनुभव से वास्तव में अच्छा है और मुझे यहां काम करने और नई-नई चीजे सीखने में मजा आता है।

नियमित कक्षाओं के दौरान मैंने अब तक यहां अपने लिए नेमप्लेट, पेन स्टैंड, म्यूरल इत्यादि बनाए है जिन्हे बनाने की प्रक्रिया में बहुत अधिक मेहनत लगती है लेकिन कलाकृति पूरी बनने के बाद बहुत अधिक खुशी महसूस होती है।

नागवंशी सर वास्तव में मिलनसार हैं, हम मॉडल बनाते समय विभाग में बातें करते हैं और सभी बच्चों के साथ मस्ती भी करते हैं। सर हमें बड़ी परियोजनाओं के लिए एक टीम के रूप में काम करने के लिए प्रेरित करते है। कुल मिलाकर, मुझे कहना है कि पेपर मैशी विभाग मजेदार और रचनात्मक है।

जयवर्धन
नौवीं ब, दौलत सदन

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

गुरू कहूँ शिक्षक कहूँ

गुरू कहूँ शिक्षक कहूँ
या फिर कहूँ ज्ञान के स्रोत
चरणों को छूकर प्रणाम करूँ,
या खाली कर दूँ शब्दकोश

प्रेरणा का पुंज कहूँ
या चरित्र का निर्माता कहूँ
या फिर अज्ञान के अँधेरे से
निकालने वाला प्रकाश स्त्रोत

क्या कहकर संबोधित करूँ
हर संबोधन अधूरा है
कहाँ से लाऊँ, मैं वो शब्द
जो हर तरह से पूरा है

अपनों को पीछे छोड़कर
जब से हॉस्टल आये हैं हम
याद उन्हें करके जब भी
थोड़ा-सा घबराये हैं हम

हाथ थामकर आपने हमारा
हमेशा उत्साह बढ़ाया है
अपनों के सपनों को पूरा करो
ये रास्ता हमें दिखाया है

समझाया है कभी प्यार से,
तो कभी मीठी-सी चपत भी लगाई है
सही राह पर लाने को,
साम दाम दण्ड भेद की नीति भी
अपनाई है

कभी प्यार से कभी फटकार से
अपनेपन का एहसास कराया है
हमने भी आपको अपना मानकर
पूरे दिल से अपनाया है

जो कुछ भी लिख रहा हूँ मैं
सिर्फ शब्द नहीं..उदगार हैं
यह केवल कविता नहीं है,
आप सभी के प्रति आभार है।

चिराग राज गोयल
दौलत सदन

बढ़े चलो

फूल बिछे हों या काँटे हों,
राह न अपनी छोड़ो तुम।
चाहे जो विपदायें आयें,
मुख को जरा न मोड़ो तुम।
साथ रहें या रहें न साथी,
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम।
नहीं कृपा की भिक्षा माँगो,
कर न दीन बन जोड़ो तुम।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा,
पाठ प्रेम का पढ़े चलो।
जब तक जान बनी हो तन में,
तब तक आगे बढ़े चलो।

जादुई तितली

रंग-बिरंगी प्यारी तितली,
मुझको बड़ा लुभाती हो।
बाग-बगीचे उड़ती फिरती,
हाथ नहीं तुम आती हो।।

लाल, हरे, नीले, चमकीले,
रंगो से सज जाती हो।
फूल-फूल पर बैठ-बैठकर,
उनका रस पी जाती हो।।

कभी हाथ मेरे भी आओ,
मुझको क्यों ललचाती हो।
प्यारी-प्यारी तितली रानी,
मुझे बहुत ही भाती हो।।

छोटी-छोटी एक पतंग-सी,
मुझको तो तुम लगती हो।
बिना डोर के उड़ती-फिरती,
मन में अचरज भरती हो।।

हंसिता मानकर
७-सी, दत्ताजी सदन

ज़रूरत है

इस कलयुग में
जागरुक होने की ज़रूरत है।
वीर और बहादुर
बनने की ज़रूरत है।

वह समय गया
जब हम दूसरो पर निर्भर थे
अपनी शक्ति को
आज़माने की ज़रूरत है।

लड़के और लड़कियों को
अच्छा और बुरा स्पर्श
बताने की ज़रूरत है।

जो बीत गया सो बीत गया
अब बच्चों को साहसी रूप
दिखाने की ज़रूरत है।

लड़कियों को तो
अपनी रक्षा करनी आनी ही चाहिए,
पर लड़कों को भी
सिखाने की ज़रूरत है।

देश का भविष्य
बच्चों के हाथ में है,
पढ़ने के साथ-साथ
उन्हें अपने हक के लिए लड़ना
यह बताने की ज़रूरत है।

लड़कियों को तो
अपने पहनावे पर ध्यान देना ही है
पर लड़कों को भी
समझदारी से जीने का ढ़ग
बताने की ज़रूरत है।
ज़रूरत है, ज़रूरत है।

हर्षप्रीत कौर
७-सी, नीमाजी सदन

बेटियाँ बोझ नहीं वरदान है

बेटियाँ बोझ नहीं वरदान है
अरे ये तो भारत माँ की
आन बान और शान है
बेटियाँ बोझ.....वरदान हैं

बेटियाँ इस जगत में
माँ काली, दुर्गा, सरस्वती का प्रतिरूप हैं
तभी तो ये सभी
उनका ही एक प्रमुख रूप है।
बेटियाँ बेटी, बहूँ और माँ के रूप में
अपने परिवार की
आन, बान और शान हैं।
बेटियाँ बोझ.....वरदान हैं

बेटियाँ कभी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
मदर टेरेसा, कल्पना चावला,
लता मंगेशकर
सुषमा स्वराज के रूप में
इस देश की प्रमुख पहचान हैं।
बेटियाँ बोझ.....वरदान हैं

फूल-सी नाजुक-सी
कली होती हैं बेटियाँ
माता-पिता की
ममता रूपी छाँव में पलती है बेटियाँ
हर घर के आँगन की
शोभा बढ़ाती हैं बेटियाँ।

सोचो जब न होंगी लड़कियाँ
इस मानव रूपी संसार में
तब क्या
तुम भी होंगे इस संसार में?

नहीं, न ही तुम होंगे इस संसार में
और न ही होगा तुम्हारा वर्चस्व
भला फिर क्यूँ आज
हमारे देश में बेटियों को
जन्म लेने से ही पहले ही
मार दिया जाता है ?
दहेज अश्लीलता रूपी
दानवों की बलि चढ़ा दिया जाता है।

अब तो सोचो देश के युवा
बदलो अपनी सोच को
बेटा हो या बेटी
दोनों से ही है इस जीवन का आधार
अब यह बात जान ले पूरा संसार

जिस समाज का कानून अंधा हो
उसे कुछ न दिखाई देता हो
जिस समाज का प्रशासन बहरा हो
उसे कुछ भी न सुनाई देता हो

जिस समाज की जनता
मूकबधिर हो
बेटियों के साथ घटित हुई घटना पर

भला फिर एक ऐसे समाज में
एक बेटी को जन्म देने वाली माँ
समाज में किससे
अपनी लड़की की
रक्षा की भीख माँगे ?
बेटियाँ बोझ नहीं वरदान है।
ये तो भारत माँ की
आन बान और शान है।

बेटियाँ बोझ नहीं वरदान है

प्रहरी मंगल सिंह तोमर

पशु-प्रेम

पिछली गर्मी छुट्टी में, जब मैं अपने घर गया था, तब एक दुर्घटना घटी। एक दिन जब मैं अपने मित्रों के साथ टहल रहा था, तभी अचानक दर्द भरी चीख सुनाई दी। वह आवाज एक कुत्ते के पिल्ले की थी। वह घायल था। उसके पैरों से खून निकल रहा था। वहाँ बच्चों की भीड़ लगी थी। उसकी यह हालत देखकर, मुझसे रहा नहीं गया। मैंने अपना रूमाल निकालकर शीघ्र ही उसके पैरों में बाँध दिया। अपने मित्र के साथ रिक्शे में बैठकर पिल्ले को गोद में ले लिया और अस्तपताल पहुँच गया। कुत्ते को सुई लगवाकर, मरहम पट्टी करवाकर उसे अपने घर ले आया। कुछ देर बाद वह शांत हो गया और प्यार की नजरों से मुझे देख रहा था।

आज तक वह मेरे घर में है और मैं उसके साथ खेलता हूँ।

अक्षत सिंह
कक्षा-नौवीं,
जीवाजी सदन

और ऐसे में अपनी माताश्री से पिटते-पिटते बचा....

तो एक दिन मैं अपना लेपटॉप चला रहा था। चार दिन बाद मेरी वार्षिक परीक्षा थी। मैं चार-पाँच घण्टे से लैपटॉप चला रहा था। मेरी माताश्री को शक हुआ कि मैं क्या कर रहा हूँ ? तो हुआ यह कि वह मेरे लिए काफी स्वादिष्ट-स्वादिष्ट पकवान ला रही थीं। जैसे- बेलन, बेल्ट, चप्पल, करछी और गरम-गरम चिमटा। ऐसे स्वादिष्ट पकवान देखकर कौन नहीं भागेगा, मैं भी भागा। मेरे पास तीन उपाय थे। या तो मैं सॉरी बोल दूँ और शायद बच जाऊँ। दूसरा चारा था कि चुपचाप मार खाऊँ। और तीसरा और आखिरी उपाय था कि दादी माँ के पास चला जाऊँ। हर एक बच्चे की तरह में भी दादी माँ के पास गया और ऐसे मैं अपनी माताश्री से पिटते-पिटते बचा।

मान्य केसरवानी, सातवीं ब, दत्ताजी सदन

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

अमित कुमारः (संस्कृत शिक्षकः)

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वंचरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

संस्कृत भाषाया प्राचीनकालात्भारतीयकलायाः, संस्कृत्याः, सभ्यतायाः , दर्शनस्य , विज्ञानस्य , गणितस्य , इतिहासस्य , तन्त्रज्ञादीनांविषयाणाम्अभिव्यक्तेः माध्यमरूपा वर्तते । अत एव भारतस्य संविधाने अष्टमसूच्यां वर्णिता आधुनिकीयं भाषा । अस्याः साहित्यं विशालतमम् अस्ति । उच्यते यत् ग्रीक- लैटिन -साहित्यद्वयमपि मेलयित्वा तुलना क्रियते चेदपि तत् संस्कृत भाषा साहित्य-समानं भवितुं नार्हति । अत एव भारतस्य संविधाने संस्कृत भाषायाः स्थानं विशेषतः कल्पितम् अस्ति। राष्ट्रिय शिक्षा नीतिः - २०२० तथा च राष्ट्रिय पाठ्यचर्या रूप रेखा २०२३ इत्यतनयोः अनुगुणं प्रमुखतः संस्कृत भाषा एव सर्वत्र वर्णिता । सिंधिया विद्यालयः अपि राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतिः - २०२० इति आधारिकृत्य " सा विद्या या विमुक्तये" एतम् उद्घोषं सार्थकं कुर्वन्निरन्तरं प्रगति पथे याति।

स्वतन्त्रः स्याम !

भारतीयाः वयं स्वातन्त्र्यस्य अमृतमहोत्सवं सवैभवम् आचरन्तः स्मः विभिन्नैः प्रकारैः। उत्सवप्रियाः वयम् उत्सवाभिमुखाः स्मः एव इत्यत्र न आश्चर्यम्। किन्तु उत्सवेन सह 'स्वातन्त्र्यं' कुत्र कथं च प्राप्येत इत्यत्र अपि अवधेयं ननु? कुत्र वयं स्वीयं तन्त्रम् उपयोक्तुं शक्नुयाम इत्येतस्मिन् विषये महता प्रयत्नेन प्रवृताः सन्ति काश्चन संस्थाः। सोऽयं विषयः अस्ति मोदावहः।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (ऋग), भारतीय भाषा समितिः, भाषिणी, **CSTT** (विज्ञानतन्त्रज्ञान-शब्दावली-आयोगः), **AI4** भारत इत्यादयः बहव्यः संस्थाः संस्कृतं केन्द्रत्वेन परिकल्प्य कार्यरताः सन्ति। सर्वत्र संस्कृतं प्रत्यक्षम् अप्रत्यक्षं वा महत्त्वपूर्णं स्थानम् आवहति इति सन्तोषः।

शब्द-शाला, अनुवाद-कार्य-शाला, पाठ्य-सामग्री निर्माणं, भारतीय ज्ञान परम्परायाः परिचयः इत्येवं बहुविधासु कार्यशालासु सम्मेलनेषु वा सहस्रशः जनाः सोत्साहं भागम् आवहन्तः दृश्यन्ते। संस्कृतस्य यथा तथा अन्यस्याः भाषायाः ज्ञानं येषाम् अस्ति ते विशिष्यन्ते एतादृशेषु कार्येषु। दिनात्मिका कार्यशाला वा भवतु, द्विवार्षावधिकः कश्चन प्रकल्पः वा भवतु, संस्कृतं तद्गतज्ञानं वा आधारभूतं तत्त्वम् इति परिगण्यमानम् अस्ति।

अद्यत्वे यत्किमपि ज्ञातुम् अनुवक्तुं च इच्छताम् अस्माकम् अनुक्षणं साहाय्यं करोति आन्तर्जालम्। किन्तु तत्र सर्वमपि आङ्ग्लभाषाम् आश्रित्य प्रवर्तते। सर्वाणि तन्त्राणि अपि अभारतीयानि एव। भारतीयभाषाभिः अपि एतत् सर्वं भवेत् चेदेव 'स्वतन्त्र' अस्य सार्थकता। भारते कस्माच्चिदपि राज्यात् राज्यान्तरं गतवन्तं जनं भाषासमस्या यथा न बाधेत तथा तन्त्रांशानां निर्माणं कृत्रिममेधायाः उपयोगेन कर्तुं शक्यते। किन्तु तदर्थं शब्दानां वाक्यानां च सुमहान् सङ्ग्रहः (**Corpus**) अपेक्षितः। तम् एतम् अंशं मनसि निधाय बहव्यः संस्थाः कार्यरताः सन्ति। तासां परस्परं साहाय्यं नूतनां दिशम् अवश्यम् एव परिकल्पयिष्यति। 'स्व'तन्त्रं विकासयितुं स्वीयं समयं कौशलं च दातुम् इच्छुकानां सङ्ख्या अपि अनल्पा इत्यंशः अस्ति नितराम् उत्साहवर्धकः।

लिखितस्य एव न, अपि तु उक्तस्य अपि वाक्यस्य अनुवादः भारतीयभाषाभिः भवतु इति स्वप्नः अस्ति बहूनाम्। विषयेऽस्मिन् शुभारम्भः तु अभवत्। सर्वे वयं सम्भूय एकया एव दिशा समग्रं सामर्थ्यम् उपयुज्य अल्पेन कालेन सपरिश्रमं यदि यतेमहि तर्हि भाषादृष्ट्या वा वयं स्वतन्त्राः स्याम। दूषणं, रोदनं वा न। अधुना तु कार्यं कर्तुम् अवसराः, मार्गदर्शकाः, नानाविधाः च उपलब्धाः सन्ति अधिकृततया। सोऽयं सामूहिकः यत्नः सफलः भवतु। 'स्व'तन्त्राः स्याम वयम्।

संस्कृतं किमर्थं न ?

मान्यः शरदबोबडे

सर्वोच्च न्यायालयस्य न्यायाधीशः
(निवृत्तः)

संस्कृतभारत्या नागपुरे जनवरीमासस्य २७ तमे दिनाङ्के आयोजिते अखिल भारतच्छात्र सम्मेलने भारतस्य सर्वोच्च न्यायालयस्य भूतपूर्वः न्यायाधीशः मा. शरदबोबडे महोदयः उद्घाटन सत्रस्य अध्यक्षत्वेन उपस्थाय स्वीयान् विचारान् प्रकटितवान्। न्यायालय-व्यवस्थायाः सर्वोच्चपदं भूषितवतः अस्य महोदयस्य एतत् भाषणं बहुचर्चितं जातम्। संस्कृत प्रेमिणः तदीयं चिन्तनं श्लाघितवन्तः, विरोधकाः वितर्कान् प्रयुक्तवन्तः च। तेन संस्कृतविषयकः स्वीयः अभिप्रायः प्रकटतया प्रतिपादितः यत् तत् तु निश्चयेन अस्ति प्रेरकम्। महोदयेन उपस्थापिताः विषयाः तर्कसङ्गताः युक्तियुक्ताः च आसन्। अपि च सर्वोच्च न्यायालयस्य भूतपूर्वः न्यायाधीशः यत् कथयति तस्य महत्त्वं तु भवति एव विशेषतया। तदीयभाषणस्य सारांशः अस्मिन् लेखे दीयते।

संस्कृतभाषा बहूनां भाषाणां जननी वर्तते। संस्कृतस्य सौन्दर्यं, नियमबद्धता, शास्त्रशुद्धता च अतुलनीया अस्ति।

न्यायाधीशाः न्यायालये भारतस्य एकात्मतायाः रक्षणार्थं दृढीकरणार्थं च शपथं स्वीकुर्वन्ति। तथापि भारतस्य प्राशासनिकी न्यायालयस्य च भाषा भविष्ये का भवेत् इति समस्यायाः निदानम् अन्वेष्टुं न्यायालयाः असमर्थाः सन्ति। साम्प्रतं नियमानुसारं हिन्दी आङ्ग्लं च भारतस्य आधिकारिक्यौ भाषे स्तः।

'प्रादेशिक्या भाषया न्यायालये वादं कर्तुम् अनुमतिः दीयताम्' इति प्रतिवेदनानि सर्वे मुख्यन्यायमूर्तयः प्राप्नुवन्ति। न्यायाधीशाः यदि भारतीयभाषां जानन्ति तर्हि अनुमतिः दीयते।

जनपदस्तरीयन्यायालयेषु, प्रादेशिकभाषाणाम् उपयोगः आरब्धः अस्ति, यथा महाराष्ट्रे - मराठी, उत्तरप्रदेशे मध्यप्रदेशे च हिन्दी इत्येवम्।

उच्चन्यायालयेषु अधिकृता भाषा यद्यपि आङ्ग्लम् अस्ति, तथापि बहुषु न्यायालयेषु आवेदनानि, वादाः, प्रमाणरूपेण कागदानि च स्थानीयाभिः भाषाभिः स्वीक्रियन्ते, किन्तु निर्णयः आङ्ग्लभाषया एव भवति।

सर्वोच्चन्यायालये प्रादेशिकभाषाभिः कार्यं भवेत् इति एतावता केनापि न निवेदितम्। किन्तु प्रादेशिकभाषया वादं कर्तुं वारं वारम् अनुमतिं पृच्छन्ति,

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

विशेषतः हिन्दीभाषिकाः तमिलभाषिकाः च । अनुमतिः तदा एव प्राप्येत यदा न्यायाधीशः तस्यां भाषायाम् असौकर्यं न अनुभवेत् । न्यायाधीशाः एतादृशेषु विषयेषु धैर्येण कार्यं कुर्वन्ति इति तु अभिनन्दनीयः विषयः ।

यद्यपि अहम् अधिकं न जानामि, तथापि प्रशासने अपि एषा एव स्थितिः स्यात् । शासने का स्थितिः इति तु अवधातव्यः विषयः । शासनस्य आदेशपत्रेषु, संसदि पारितेषु प्रस्तावेषु, नियमरचनासमये च लेखनं हिन्दीभाषया भवति । किन्तु केषुचित् राज्येषु तत्रत्यायाः भाषायाः हिन्दीभाषायाः च सामीप्यम् आधिक्येन न भवति । आङ्ग्लभाषया व्यवहारः क्रियेत चेत् तत्र्याः अवगच्छेयुः इति स्थितिः अपि नास्ति, यतो हि ६% जनाः एव भारते आङ्ग्लम् अवगच्छन्ति । सर्वकारीया न्यायालयीया वा भाषा इतोऽपि अवगन्तुं दुष्करा । यया भाषया सर्वकारीयं कार्यं चलति, तस्याः अवगमनम् अधिकानां नास्ति इति तु शोचनीया स्थितिः ।

सर्वोच्चन्यायालयस्य निर्णयाः प्रादेशिकभाषया भवेयुः इति भारतस्य राष्ट्रपतिना रामनाथकोविन्देन विचारार्थम् उक्तम् आसीत् । सर्वोच्चन्यायालयेन कृत्रिमबुद्धिम् उपयुज्य अनुवादः कारितः ।

राष्ट्रभाषाविषये अनिर्णयः न भवेत् इति मे मतं, यतोहि १९४९ तः एषः विषयः प्रलम्बितः अस्ति । न्यायालयानां निर्णयानां क्रियान्वयने प्रशासने सर्वकारेषु च संवादहीनता गभीरान् सङ्कटान् आमन्त्रयिष्यति ।

भारतस्य आधिकारिकी भाषा संस्कृतं भवेत् इति प्रस्तावः संविधानसभायां डा. आम्बेडकरेण आनीतः इति १९४९ तमवर्षस्य सप्टम्बर्मासस्य एकादशे दिनाङ्के वार्तापत्रिकासु वार्ता प्रकाशिता जाता । आङ्ग्लभाषा तु पञ्चदशवर्षपर्यन्तम् एव सर्वकारीयकार्येषु भविष्यति इत्यपि तेन प्रस्तावितम् आसीत् । भाषाप्रस्तावे सा एव भाषा आधिकारिकं स्थानं भजेत् या सर्वकारेण सह प्रजानां संवादे उपयोगिनी स्यात् इति अपेक्षा प्रकटिता जाता । भारते तु बहव्यः भाषाः, विपुलाः उपभाषाः च सन्ति । तासु एका केन्द्र-राज्य-जनेषु च सम्पर्कभाषारूपेण कार्यं कुर्यात् । संस्कृतस्य प्रस्तावे नजिरुद्दिन-अहमदः, डा. बी.व्ही.केसकरः (विदेशराज्यमन्त्री), लक्ष्मीकान्तमैत्रः (बङ्गाल), टी.टी.कृष्णाचारी (मद्रास), जी.एस.गुहा (त्रिपुरा, मणिपुर खासीराज्ये च), सी.एम.पूणचः (कोडगु, कर्णाटकम) मुनिस्वामिपिल्लै (मद्रास), कालुसुब्बाराव (मद्रास), व्ही. सी.केशवरावः (मद्रास), डी. गोविन्ददासः (मद्रास), डा. पी. सुब्बरायन् (मद्रास), डा.व्ही.सुब्रमणियम (मद्रास), डा.दक्षिणायनीवेलायुधन् (मद्रास) इत्येतेषां हस्ताक्षराणि आसन् । वेलायुधः वर्या एका एव अनुसूचितजातीया सदस्या संविधानसमितौ आसीत् । सा अनुसूचितजातीयेषु प्रथमा स्नातका ।

प्रस्तावस्य हेतुः स्पष्टः आसीत् - सामान्याः प्रशासनम् अवगच्छेयुः इति । जनानाम् आङ्ग्ल-भाषायाः परिचयः तु अत्यल्पः आसीत् । स्वातन्त्र्यस्य पञ्चसप्ततेः वर्षाणाम् अनन्तरम् अपि प्रतिशतं द्वित्रमात्रजनाः अनर्गलतया आङ्ग्लभाषया व्यवहरन्ति । डा. आम्बेडकरस्य प्रस्तावः संविधान-सभायां न चर्चितः एव । तस्य स्थाने संस्कृतस्य आधारेण विकसिता हिन्दीभाषा भारतस्य आधिकारिकी भाषा भवेत् इति प्रस्तावः आनीतः, पारितः जातः च । प्रस्तावः संविधानस्य अङ्गतया ३५१तमः धारास्वरूपं प्राप्नोत् । तत्र लिखितम् अस्ति - 'हिन्दीभाषायाः प्रसारः भवेत् इति सर्वकारस्य कर्तव्यम् । तस्याः विकासः सम्पर्कभाषारूपेण, भारतस्य मिश्रितसंस्कृतेः अभिव्यक्तिरूपेण च भवेत् । सा भाषा मुख्यतः संस्कृतशब्दानाम् आधारेण समृद्धा स्यात् । संविधानस्य अष्टमधारायाम् अन्तर्भूताः भाषाः अपि हिन्दीं समृद्धां कुर्युः' इति ।

एतस्य पठनात् ज्ञायते यत् अन्यासु भाषासु अपि संस्कृतभाषायाः प्राबल्यं विद्यते इति । ईदृश्यां स्थितौ प्रश्नः उद्भवति एव यत् संस्कृतं किमर्थं भारतस्य आधिकारिकभाषात्वेन न घोषिता, यथा डा. आम्बेडकरेण प्रस्तावितम् आसीत् ?

संस्कृतभाषा कस्याश्चिदपि उपासनापद्धत्याः प्रतिनिधित्वं न करोति । यतः ९५% संस्कृतसाहित्ये कस्यापि सम्प्रदायस्य उपस्थितिः एव नास्ति । दर्शनानि, धर्मशास्त्रं, विज्ञानम, अलङ्कारशास्त्रम, उच्चारणशास्त्रं, तर्कः, वास्तुशास्त्रं, ज्योतिषम् इत्यादीनि शास्त्राणि संस्कृते निबद्धानि सन्ति ।

संस्कृतं न दक्षिणभारतस्य, न वा उत्तरभारतस्य प्रतिनिधिः, अपितु सा मतनिरपेक्षा भाषा । भाषाप्रक्रियायां कृत्रिमबुद्धिप्रदाने च संस्कृतस्य उपयोगः भविष्यति इति 'नासा'संस्थाने कार्यरतः वैज्ञानिकः वदति । अल्पैः शब्दैः भावप्रकटनं संस्कृतेन शक्यते इत्येतत् एव तत्र कारणम् ।

संस्कृतं यथा अस्ति तथा स्वीकरणीयम् । भाषा सम्भाषणमात्रे उपयुक्ता भवेत, न तु सम्प्रदायस्य प्रवर्तने । अत्र किमपि नावीन्यं नास्ति । आङ्ग्लैः सह आङ्ग्लभाषा भारतम् आगता । तस्मात् पूर्वं केनापि सा भाषा श्रुता उच्चारिता वा न आसीत् । आङ्ग्लभाषा प्रशासनभाषारूपेण १८३५ तमे वर्षे भारतं प्राप्ता, न तु क्रैस्तवभाषारूपेण । तदा विलियम्बेण्टिकः भारतस्य प्रशासनप्रमुखः (गवर्नर्जनरल) आसीत् । आङ्ग्लभाषायाः भारते प्रवर्तनसमये मेकाले उक्तवान् - 'आङ्ग्लभाषा कदापि मतपरिवर्तने संलग्नानां साहाय्यं न करिष्यति इति विश्वसिमि' इति । सः अग्रे उक्तवान् - 'अरबी संस्कृतं चेत्यनयोः भाषयोः पुस्तकानि न प्रकाशनीयानि । यतः तादृशप्रयत्नतः भारतीयाः शिक्षिताः न भवेयुः । मातृभाषया एते शिक्षिताः नैव भविष्यन्ति । अस्माभिः तेभ्यः काचित् विदेशीया भाषा पाठनीया । अरबीभाषायां संस्कृते च उपयोगिज्ञानस्य अभावः विद्यते । तयोः भाषयोः पठनेन अन्धविश्वासमात्रं दृढं भवेत् । यतः एताभ्यां भाषाभ्यां सह अनुचिता उपासनापद्धतिः अस्ति' इति ।

'सेक्युल'भाषायाःप्रस्तावस्यस्वीकारोक्तिः केभ्यश्चित् असम्भवा प्रतीयते । परन्तु एषा प्रौद्योगिक्याः भाषा भवेत् इति यदि इच्छा तर्हि सा मतनिरपेक्षतायाः निर्वहणं कुर्यात् । संस्कृतस्य अस्तित्वं बौद्ध-जैन-सिख्खादिसम्प्रदायानाम् आधारेण विना अपि अस्ति ।

१८३४ तमे वर्षे प्राशासनिकभाषारूपेण आङ्ग्लभाषया व्यवहारे काठिन्यं न आसीत् किम् ? आङ्ग्लैः एतस्य विषये कदापि चिन्ता न कृता । भारतीयाः तेषां पत्रव्यवहारम, नियमान् च अवगच्छन्ति किम् इत्यत्र तैः अवधानं न दत्तम् एव । तेषां सर्वविधकागदानाम् अनुवादं ते स्वयम् एव कुर्वन्ति स्म, अधीनानां द्वारा कारयन्ति स्म वा । सद्यःकालीनं सर्वेक्षणं वदति - ४३.६ % जनाः हिन्दीभाषया वदन्ति, ६% नागरिकाः आङ्ग्लभाषया वदन्ति इति । तेषु 3% ग्रामीणाः आङ्ग्लभाषया वक्तुं समर्थाः ।

सर्वासु प्रादेशिक-भाषासु संस्कृतशब्दानाम् उच्चारणेन विना संवादः न शक्यते । भारते केषुचित् ग्रामेषु व्यवहारभाषा संस्कृतम् अस्ति । अतः संस्कृतभाषा भारतस्य राष्ट्रभाषात्वेन परिकल्येत चेत् कुत्रपि विप्रतिपत्तिः न भवेत् इति भाति ।

संस्कृतं व्यवहारे आनेतुं निश्चयेन कालः अपेक्ष्यते । व्यावसायिकाः पाठ्यक्रमाः संस्कृतेन आदौ आनेतव्याः । साम्प्रतं संस्कृतभाषा उत्तराखण्डस्य हिमाचलस्य च द्वितीयराजभाषा अस्ति । गच्छता कालेन अन्येषु अपि राज्येषु संस्कृतं द्वितीयराजभाषारूपेण आनेतुं शक्यम् । ३४८ (१,२) धाराद्वारा संस्कृतस्य आनयने बाधा नास्ति । आङ्ग्लभाषाकारणेन बहुसंख्याकाः भाषा दुर्लक्षिताः जाताः । तासां स्वरः उपेक्षितः, महत्त्वं च न वहति । अतः पी.टी. आरसंवाददात्रे आम्बेडकरस्य प्रतिप्रश्नः आसीत् - 'संस्कृतं किमर्थं न ?'

स च प्रश्नः अधुनापि अस्ति अनुत्तरितः।

(मान्येन श्रीशदेवपुजारीवर्येण अयं संस्कृतानुवादः सज्जीकृतः ।)

असाधारणी प्रतिभा

प्रतिभा मेधाविता इत्यादयः भगवतः उपायनानि । भगवतः अनुग्रहः स्यात् चेदेव मेधाविनादयः प्राप्यन्ते । केचन आजन्मनः मेधाविनः भवन्ति । अन्ये केचन कस्मिंश्चित् वयोविशेषे मेधावितां प्राप्तुम् अर्हन्ति । मेधाविता येषां स्यात् तैः तस्याः मेधाविताया: अभिवर्धनाय सततपरिश्रमः करणीयः भवति एव । परिश्रमं विना भगवता दत्ता अपि मेधाविता न विकसेत् ।

भारतं तु महामेधाविनाम् उत्पत्तिभूमिः । महामेधाविनः बहवः इतः पूर्वम् अत्र जन्म प्राप्तवन्तः, अद्यापि तादृशाः सन्ति, अग्रे अपि भविष्यन्ति एव । एतादृशेषु महामेधाविषु अन्यतमः अस्ति नीलकण्ठभानुप्रकाशः, यश्च एकविंशतिवर्षीयः सन् गणितक्षेत्रे 'जागतिकस्तरे अतिवेगेन गणनादिकं कर्तुं समर्थः अद्वितीयः मेधावी' इति ख्यातः अस्ति ।

इतः पूर्वं शकुन्तलादेवीवर्या त्रयोदशाङ्कात्मकस्य सङ्ख्याद्वयस्य गुणनं २८ कलाभ्यन्तरे (सेकेण्ड्स्) कृत्वा जगति अद्वितीयतां सम्पादितवती आसीत् । १९८२ तमे वर्षे तस्याः नाम गिन्निस्पुस्तके उल्लिखितम् आसीत् अपि । २०२०तमे वर्षे लण्डननगरे प्रवृत्तायां 'मेण्टल् क्याल्क्युलेषन् वर्ल्ड चाम्पियन्शिप् मैण्ड् स्पोर्ट्स् ओलम्पियाड्' इत्यत्र भागम् ऊढ्वा स्वर्णपदकं प्राप्तवान् भानुप्रकाशः । एतस्मात् शकुन्तलादेवीवर्यया या अद्वितीयता प्राप्ता आसीत् ताम् अतिक्रम्य अतिष्ठत् अयम् । पञ्चाशदधिकाः अद्वितीयविक्रमाः अनेन साधिताः एतावता एव ।

गणितक्षेत्रे प्राप्तपदवीकः अयम् अद्यत्वे सर्वत्र ख्यातः अस्ति । लघुवयस्कानां बालानां पाठने तस्य महती आसक्तिः । टेन्नीस्क्रीडायां, शास्त्रीयसङ्गीते चापि तस्य विशेषरुचिः । तत्रापि सङ्गीतक्षेत्रे

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

यः गणितीयसम्बन्धः दृश्यते तस्य आकलनात् तु सः बहुधा रोमाञ्चितः भवति ।

अल्पे एव वयसि गणितक्षेत्रे असाधारणीं सिद्धिम् आसादितवतः भानुप्रकाशस्य या कीर्तिः अद्यत्वे सर्वत्र प्रसृता ततः प्राप्यते महान् आनन्दः । भाविनि काले विविधाः सिद्धीः बहुधा आसादयन् भारतमातुः कीर्तिम् उत्तुङ्गतां प्रापयिष्यति सः इत्यत्र नास्ति सन्देहः ।

प्राचीनभारतीयाः लिपयः

भरतखण्डस्य लिपिविकासक्रमस्य गौरवोज्ज्वलः इतिहासः अद्यत्वे प्राच्यविद्याकेन्द्रेषु संस्कृतविद्याप्रतिष्ठानेषु वा न चर्च्यते पाठ्यते वा इति तु अत्यन्तं खेदावहः विषयः । भाषालिप्योः सङ्गमः वागर्थयोरिव पवित्रः विद्यते । तस्मात् तौ अस्माकं कल्पनायाम् अपि पार्थक्येन द्रष्टुं न पारयामः वयम् ।,

लेखनसाधनभूता भवति लिपिः । लिपिशब्दस्य प्रयोगः महर्षिणा पाणिनिना प्रणीते व्याकरणग्रन्थे (अष्टाध्यायी, ३.२.२१) उपलभ्यते । परन्तु तत्काले देशे कतिप्रकारिकाः लिपयः आसन, तासां नामानि कानि इत्येतेषु विषयेषु विस्तरः तत्र न कोऽपि उल्लिखितः वर्तते । कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रे (२.१.२) अपि राजपुत्रेभ्यः पाठनीयविषयत्वेन लिपिः उल्लिख्यते । ततोऽधिकं तथ्यं तु नैव लभ्यते तत्र अपि । अशोकस्य शिलालेखेषु 'लिपिः', 'लिबि', 'दीपि' इति शब्दाः दृश्यन्ते । ते सर्वे लेखनसम्बन्धं द्योतयन्ति । अशोकस्य काले न्यूनातिन्यूनं लिपिद्वयं (ब्राह्मी, खरोष्ठी च) व्यवहारे आसीत् । परन्तु अशोकस्य शिलालेखेषु कुत्रापि लिपीनां नामानि न लिखितानि ।

जैनसूत्रग्रन्थेषु लिपीनाम् उल्लेखः

जैनसूत्रग्रन्थेषु पन्नवणासूत्रे, समवायाङ्गसूत्रे, भगवतीसूत्रे च अष्टादशानां लिपीनां नामानि प्राप्यन्ते । तासां लिपीनां सूची यथा -

१. बंभी (ब्राह्मी)

२. जवनालि जवणालिय वा (ग्रीक्लिपिः)

३. दोसपुरिय (अथवा दोसपुरिस)

४. खरोत्थि (खरोष्ठी)

५. पुक्खरसरिया

६. भोगवैगा

७. पहाराइय (पहरैया वा)

८. उय-अंतरिक्खिया (उयमितर करिय)

९. अक्खरपिट्ठिया (अक्खबरपुंट्ठिया)

१०. तेवनैया (वेणैया वा)

११. गि (नि)न्हैया (ण्हिणत्तिया)

१२. कलिवि (कलिक्ख वा)

१३. गनितलिबि (गनियलिबि वा)

१४. गंधव्वलिबि

१५. आदंसलिबि (आयसलिबि वा)

१६. माहेसरि (महास्सरि वा)

१७. दामिलि (द्राविडम्)

१८. पोलिम्दि (पौलिन्दिः, पुलिन्दानां लिपिः) ।

ललितविस्तरग्रन्थे लिपीनाम् उल्लेखः -

जैनसूत्रग्रन्थेषु या सूची उपलभ्यते ततः अपि दीर्घा सूची ललितविस्तरः इत्याख्ये बौद्धग्रन्थे समुल्लिखिता ।

ललितविस्तरे निर्दिष्टाः लिपयः -

१. ब्राह्मी

२. खरोष्ठी

३. पुष्करसारिः

४. अङ्गलिपिः

५. वङ्गलिपिः

६. मागधीलिपिः

७. माङ्गल्यलिपिः

८. मनुष्यलिपिः

९. अङ्गुलीयलिपिः

१०. शकारिलिपिः

११. ब्रह्मवल्लीलिपिः

१२. द्राविडलिपिः

१३. कनारिलिपिः

१४. दक्षिणलिपिः

१५. उग्रलिपिः

१६. संख्यालिपिः

१७. अनुलोमलिपिः

१८. ऊर्ध्वधनुर्लिपिः

१९. दरदलिपिः

२०. खस्यलिपिः

२१. चीनलिपिः

२२. हूणलिपिः

२३. मध्याक्षरविस्तारलिपिः

२४. पुष्पलिपिः

२५. देवलिपिः

२६. नागलिपिः

२७. यक्षलिपिः

२८. गन्धर्वलिपिः

२९. किन्नरलिपिः

३०. महोरगलिपिः

३१. असुरलिपिः

३२. गरुडलिपिः

३३. मृगचक्रलिपिः

३४. चक्रलिपिः

३५. वायुमरुलिपिः

३६. भौमदेवलिपिः

३७. अन्तरिक्षलिपिः,

३८. उत्तरकुरुद्वीपलिपिः

३९. उत्तरगौडलिपिः

४०. पूर्वविदेहलिपिः

४१. उत्क्षेपलिपिः

४२. निक्षेपलिपिः

४३. विक्षेपलिपिः

४४. प्रक्षेपलिपिः

४५. सागरलिपिः

४६. वज्रलिपिः

४७. लेखप्रतिलेखलिपिः

४८. अनुद्रुतलिपिः

४९. शास्त्रावर्तलिपिः

५०. गणावर्तलिपिः

५१. उत्क्षेपावर्तलिपिः

५२. विक्षेपावर्तलिपिः

५३. पादलिखितलिपिः

५४. द्विरुत्तरपदसन्धिलिखितलिपिः

५५. दशोत्तरपदसन्धिलिखितलिपिः

५६. अध्याहारिणीलिपिः

५७. सर्वरुत्संग्रहणीलिपिः

५८. विद्यानुलोमलिपिः

५९. विमिश्रितलिपिः

६०. ऋषितपस्तोतलिपिः

६१. धरणिप्रेक्षणलिपिः

६२. सर्वौषधनिष्यन्दलिपिः

६३. सर्वसारसंग्रहणलिपिः

६४. सर्वभूतरुद्ग्रहणीलिपिः

परन्तु अद्यत्वे उपरि विद्यमानासु लिपिषु केवलस्य लिपिद्वयस्य (ब्राह्मी खरोष्ठी च) अस्तित्वं लोकविदितम् । अस्मिन् विषये प्राचीनचीनदेशीयविश्वकोषः फा-वान्-सु-लिन् (रचनाकालः ६१८ क्रै०) काञ्चित् विशिष्टां दृष्टिं प्रकटयति।

अस्य ग्रन्थस्य आशयः इत्थम् - लेखनक्रियायाः आविष्कारस्य कारणीभूताः भवन्ति तिस्रः दैवशक्तयः । प्रथमा

शक्तिः ब्रह्मा (फान) इति उल्लिखिता । यः (ब्रह्मा) वामतः लिख्यमानायाः ब्राह्मीलिपेः जनकः आसीत् । तथा च नारदस्मृतौ (४-७०) -

नाऽकरिष्यद्यदि ब्रह्मा लिखितं चक्षुरुत्तमम्।

तत्रेयमस्य लोकस्य नाभविष्यच्छुभा गतिः

(ब्राह्मीलिपिः)

(खरोष्ठीलिपिः)

(सिन्धुलिपिः)

(ग्रन्थलिपिः)

द्वितीया दैवशक्तिः 'खरोष्ठः' (क्या-लु) इति आख्याता, या च दक्षिणतः लिख्यमानायाः खरोष्ठीलिपेः आविष्कर्त्री आसीत् । अपेक्षाकृतगौणा तृतीया शक्तिः त्सम-कि आसीत, या उल्लम्बक्रमेण लिख्यमानायाः लिपेः आविष्कारम् अकरोत् । लिपीनाम् आविर्भावस्थानस्य विषये अपि विश्वकोषः पुनर्निर्दिशति यत् प्रथमद्वितीयशक्तिद्वयस्य जननं भारते जातम, तृतीयशक्तेः प्रादुर्भावस्तु चीनदेशे आसीत् इति ।

अशोकस्य शिलालेखेषु प्रथमस्य लेखनप्रकारद्वयस्य समकालिकानि निदर्शनानि लभ्यन्ते । आधिक्येन अशोकस्य शिलालेखाः ब्राह्मीलिप्या विद्यन्ते । एषा लिपिः तस्मिन् काले सर्वप्रचलिता लिपिः आसीत् । मानसेरा-शाहबाजगढीतः प्राप्तौ द्वौ अभिलेखौ खरोष्ठीलिप्या विद्येते, यत्र अक्षराणां दक्षितो गतिः अभिलक्षयितुं शक्या ।

लिपीनां विभागः

सूक्ष्मनिरीक्षणेन अधिकांशलिपीनां वर्गशः विभाजनम् इत्थं कर्तुं प्रभवामः -

(१) भारतस्य प्राचीनसर्वप्रचलिता लिपिः - ब्राह्मी । एषा अक्षरसम्बद्धलेखनप्रणाली आसीत् ।

(२) भारतस्य उत्तरपश्चिमभागयोः सीमिता लिपिः - खरोष्ठी ।

(३) भारते परिचिताः वैदेशिकलिपयः - (अ.) यवनाली (यवनानी) = ग्रीक् । भारतीयाः वाणिज्यसम्बन्धेन अस्याः लिप्याः परिचयवन्तः आसन् । इण्डो-बैक्ट्रियन्मुद्रासु कुषाणमुद्रासु च अस्याः लिपेः प्रयोगः आसीत् इति विषयः सर्वजनविदितः । (आ) दरदलिपिः (दरदजनानां लिपिः) (इ) खस्य लिपिः

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

(खसो-यानेशकजनानां लिपिः) (ई) चीनीलिपिः (चीनदेशस्य लिपिः) (उ) हूणलिपिः (हूणजनानां लिपिः) (ऊ) असुरलिपिः (पश्चिम-एशियाखण्डस्य लिपिः) (ए) उत्तरकुरुद्वीपलिपिः (हिमालयस्य उत्तरदिशि स्थितानाम् उत्तरकुरुजनानां लिपिः) (ऐ) सागरलिपिः (सागरसम्बद्धाः लिपयः) ।

(४) प्रदेशानुगुणं लिपयः

भरतवर्षस्य आधुनिक्यः प्रादेशिकभाषाणां लिपयः ब्राह्मीनिष्पन्नाः सन्ति इत्यस्मिन् विषये नास्ति सन्देहस्य लेशमात्रम् । ब्राह्मीसमकालीनाः प्रादेशिकलिपयः कालान्तरेण सर्वाः अपि विलुप्तिं गताः । ब्राह्मी- समुद्भूताः लिपिप्रकाराः नामाङ्किताः सन्ति अत्र - (अ) पुखरसारिय (पुष्करसारिया वा) - प्रायः इयं लिपिः पश्चिमगन्धारदेशस्य राजधान्यां पुष्करावत्यां प्रचलिता आसीत् । (आ) पहारैय (उत्तरपर्वतीयप्रदेशानां लिपिः) (इ) अङ्गलिपिः (उत्तरपूर्वबिहारप्रदेशस्य लिपिः) (ई) वङ्गलिपिः (बङ्गप्रदेशे प्रचलिता लिपिः) (उ) मगधलिपिः (मगधप्रदेशीयैः उपयुज्यमाना लिपिः) (ऊ) द्रविडलिपिः (दामिलि वा) (द्रविडप्रदेशीयैः उपयुज्यमाना लिपिः) (ए) कनारिलिपिः (कन्नडलिपिः) (ऐ) दक्षिणलिपिः (दाक्षिणात्यैः उपयुज्यमाना लिपिः) (ओ) अपरगौडीलिपिः (पश्चिमगौडप्रदेशस्य लिपिः) (औ) पूर्वविदेहलिपिः (पूर्वविदेहराज्यस्य लिपिः)

(५) जात्यानुगुणं लिपयः (अ) गन्धर्वलिपिः (हिमालयस्य गान्धर्वाणां लिपिः) (आ) पोलिन्दि (विन्ध्याचलस्थपुलिन्दजातेः लिपिः) (इ) उग्रलिपिः (उग्रजातेः लिपिः) (ई) नागलिपिः (नागजातीया लिपिः) (उ) यक्षलिपिः (हिमालयस्थानां यक्षजातीयानां लिपिः) (ऊ) किन्नरलिपिः (हिमालयप्रदेशीयकिन्नराणां लिपिः) (ए) गरुडलिपिः (गरुडजातेः लिपिः) ।

(६) साम्प्रदायिकाः लिपयः - (अ) महेसरी (महेस्सरि = महेश्वरी) शैवजनेषु प्रचलिता लिपिः (आ) भौमदेवलिपिः (भूमौ देवतानां ब्राह्मणानां च लिपिः)

(७) चित्रात्मकलिपयः अथवा चित्रलिपयः - (अ) माङ्गल्यलिपिः (माङ्गलिकी लिपिः) (आ) मनुष्यलिपिः (मानवाकृतिरूपा लिपिः) (इ) अङ्गुलीयलिपिः (अङ्गुलीयानां साम्यरूपा लिपिः) (ई) ऊर्ध्वधनुर्लिपिः (धनुषाकृतिः लिपिः) (उ) पुष्पलिपिः (पुष्पवच्चित्रकलया शोभिता लिपिः) (ऊ) मृगचक्रलिपिः (पशुवृत्तेन लिखिता लिपिः) (ए) चक्रलिपिः (वृत्ताकृतिः लिपिः) (ऐ) वज्रलिपिः (वज्रतुल्यस्वरूपा लिपिः)

(८) साङ्केतिक्यः लिपयः - (अ) आङ्कलिपिः (संख्यालिपिर्वा) (वर्णस्य स्थाने अङ्कानां प्रयोगः यत्र क्रियते सा लिपिः) (आ) गणितलिपिः (गणितसम्बद्धा विशिष्टा लिपिः)

(९) उत्कीर्णा अथवा छिन्नलिपिः - (अ) आदेशलिपिः (आयसलिपिः वा) (लौहोपकरणेन उत्कीर्णा लिपिः)

(१०) शैलीविशिष्टाः लिपयः

(अ) उत्क्षेपलिपिः (उर्द्धमुखीलिपिः) (आ) निक्षेपलिपिः (निम्नमुखीलिपिः) (इ) विक्षेपलिपिः (विमुखीलिपिः) (ई) प्रक्षेपलिपिः (प्रकृष्टलिपिः) (उ) मध्याक्षरविस्तारलिपिः (सौन्दर्यवर्धनार्थं यस्याः लिपेः अक्षरस्य मध्यभागः विस्तृतीकृतः सा)

(११) यौगान्तरिकलिपयः - (अ) विमिश्रितलिपिः (रूपसंयोगस्य वर्णानां च मिश्रणरूपा लिपिः)

(१२) अनुलेखनम् - (अ) अनुद्रुतलिपिः (द्रुतलेखनम्, **short&hand**)

(१३) ग्रान्थिकशैलीविशिष्टा लिपिः - (अ) शास्त्रवर्तलिपिः (विशिष्टग्रन्थानां लेखने प्रयुक्ता लिपिः)

(१४) गणनाशैलीविशिष्टा लिपिः - (अ) गणावर्तलिपिः (गणितसम्बन्धा काचित् विशिष्टा लिपिः)

(१५) काल्पनिक्यः पारलौकिक्यः च लिपयः - (अ) देवलिपिः (देवतानां लिपिः) (आ) महोरगलिपिः (सर्पाणां लिपिः) (इ) वायुमरुलिपिः (मरुद्गणानां लिपिः) (ई) अन्तरिक्षदेवलिपिः (आकाशस्थानां देवतानां लिपिः)

पारलौकिकीः काश्चन लिपीः विहाय उपरि विवृताः सर्वाः अपि लिपयः, तासां शैलीप्रकाराः च भरतवर्षस्य विविधेषु प्रदेशेषु प्रतिवेशिदेशेषु च विद्यमानाः आसन् ।

हडप्पा-मोहेनजोदरोस्थानयोः उत्खननात् पुरातत्त्वविशारदैः प्रतिपादितं यत् ५००० सा.श.पू. भारतखण्डे सिन्धुलिपिर्नाम्नी प्रचलिता लेखनप्रणाली आसीत् इति । विविधप्रमाणानि आधारीकृत्य वक्तुं पारयामः यत् एषा विश्वस्य प्राचीनतमा लेखनप्रणाली आसीत् इति । प्रारम्भिकध्वन्यात्मकलेखनयुगयोः सङ्क्रान्तिकाले समुद्भूता विमिश्रिता लिपिः आसीत् एषा सिन्धुलिपिः ।

भरतखण्डस्य लिपिविकासक्रमस्य गौरवोज्ज्वलः इतिहासः अद्यत्वे प्राच्यविद्याकेन्द्रेषु संस्कृतविद्या-प्रतिष्ठानेषु वा न चर्च्यते पाठ्यते वा इति तु अत्यन्तं खेदावहः विषयः । भाषालिपेः सङ्गमः वागर्थयोरिव पवित्रः विद्यते । तस्मात् तम् अस्माकं कल्पनायाम् अपि पार्थक्येन द्रष्टुं न पारयामः वयम् ।

साक्षात्कार

जर्मन देश से अपनी व्यक्तिगत यात्रा पर आये यानिस और लिली से जर्मन भाषा के छात्र पृथ्वी राजस्वरुप पाठक एवं ऋषित शर्मा की उनके यात्रा संबंधी अनुभव के बारे में बातचीत ।

हम: हैलो! इतने लंबे समय के बाद हमारे स्कूल को फिर से देखने और अपने भारत दौरे से समय निकालकर हमारे प्यारे विद्यालय के परिसर में आने के लिए लिली और यानिस को बहुत-बहुत धन्यवाद । अब हम आपकी पिछली भारत यात्रा और आपकी छुट्टियों के बारे में कुछ प्रश्नों के साथ बातचीत की शुरुआत करेंगे। क्या आप हमें अपनी पिछली भारत यात्रा के बारे में जानकारी दे सकते हैं?

यानिस-लिली: हमें फिर से मिलने के लिए धन्यवाद! भारत में हमारा पिछला अनुभव खुशी और जिज्ञासा से भरा था। हमारा अनुभव गोएथे इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित जर्मन युवा शिविर के लिए गोवा की उड़ान से शुरू हुआ, हमने विभिन्न मजेदार गतिविधियों में भाग लिया और सिंधिया में हमारे दोस्तों के बारे में पता चला। हमने वहाँ बहुत अच्छा समय बिताया। मगरमच्छ सफारी काफी मजेदार थी, हमने एक नाव किराये पर ली। जो हमें एक नदी के बीच में ले गई। क्षमा करें मुझे नाम याद नहीं है। हाँ, शुरू में हमने कोई मगरमच्छ नहीं देखा, लेकिन अंत तक, हमें काफी मगरमच्छ मिले। मुझे गोवा की राजधानी जाना भी याद है।

हम: पंजिम से आपका क्या मतलब है ?

यानिस-लिली: हाँ, हम वहाँ गए थे। हमने स्थिरता और सतत विकास लक्ष्यों के बारे में विभिन्न चर्चाएँ और कार्यशालाओं में शिरकत की।

हम: आपको गोवा में क्या अलग लगा?

यानिस-लिली: हाँ, सबसे अलग गोवा का तापमान था। इस तरह का अच्छा और हवादार माहौल होना वास्तव में सुखद अनुभव था।

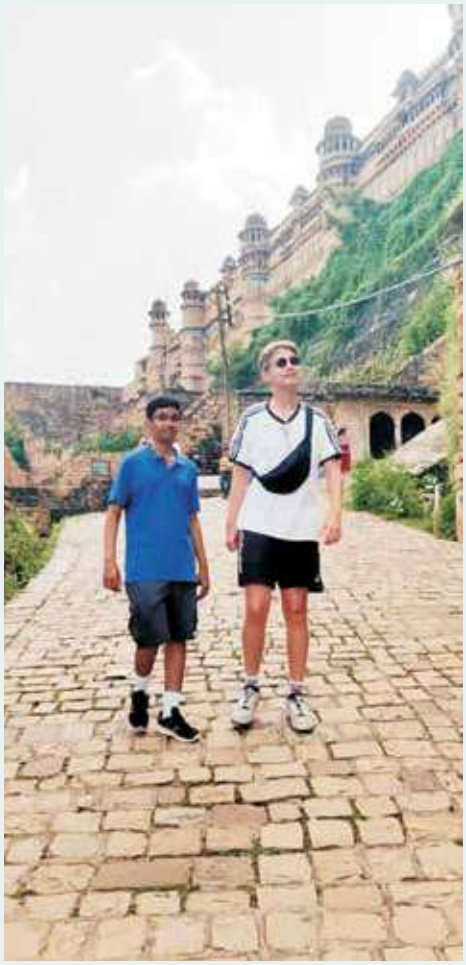

हम: गोवा के बाद आपने क्या

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

किया?

यानिस-लिली: हम आपके प्यारे परिसर में आए थे, यहाँ किले पर।

हम: आप पहले सिंधिया में क्या करते थे?

यानिस-लिली: हम श्री गोपाल चतुर्वेदीजी से मिले और छात्रों से बातचीत भी की। हम हरे-भरे घास के मैदान में भी गए।

हम: हरे-भरे घास के मैदान से आपका मतलब ***इकोलॉजीकल पार्क, है न?***

यानिस-लिली: हाँ, हमने बहुत कुछ सीखने के साथ यहाँ कुछ पेड़ भी लगाए। हम अस्ताचल भी गए जो वास्तव में आनंद देने वाला था। ग्वालियर में, हम खरीददारी के लिए भी गए और जर्मनी में अपने परिवारों के लिए उपहार खरीदे।

हम: जर्मनी की तुलना में आप भारत में क्या प्रमुख अंतर पाते हैं?

यानिस-लिली: हाँ, भारत और डॉयचलैंड में बहुत अंतर हैं। यहाँ का मौसम बहुत बेहतर है क्योंकि आपको सभी प्रकार के मौसमों का अनुभव होता है, और हर दूसरे दिन बर्फ नहीं पड़ती है। प्रकृति बहुत बेहतर है। यहाँ बहुत शांत और निर्मल महसूस होता है। यातायात एक ऐसी चीज है जिसके लिए हम खुद को

असहज पाते हैं। ऐसा लगता है जैसे सभी हॉर्न और सायरन एक-दूसरे से बात कर रहे हों। मगर यहाँ मसालों से बना भोजन बहुत अच्छा लगता है।

हम: यह सब मसाला का जादू है।

आगे आपकी क्या योजनाएँ हैं?

यानिस-लिली: अब हम कोच्चि के लिए उड़ान भरकर पूरे भारत में अपनी यात्रा जारी रखेंगे। हमने दक्षिण भारत की यात्रा नहीं की है, इसलिए कोच्चि के लिए जब उड़ान भरेंगे, हमें दक्षिण में जाने का एक नया अवसर मिलेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें आराम करने का मौका मिलेगा।

हम: अच्छा! हमें लगता है कि यह साक्षात्कार अब खत्म हुआ। किले पर हमारे साथ फिर से आने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। हम आशा करते हैं कि आप बहुत जल्द फिर से आएंगे। तब तक, वीलेन डंक!

यानिस-लिली: ***वीलेन डैंक!***

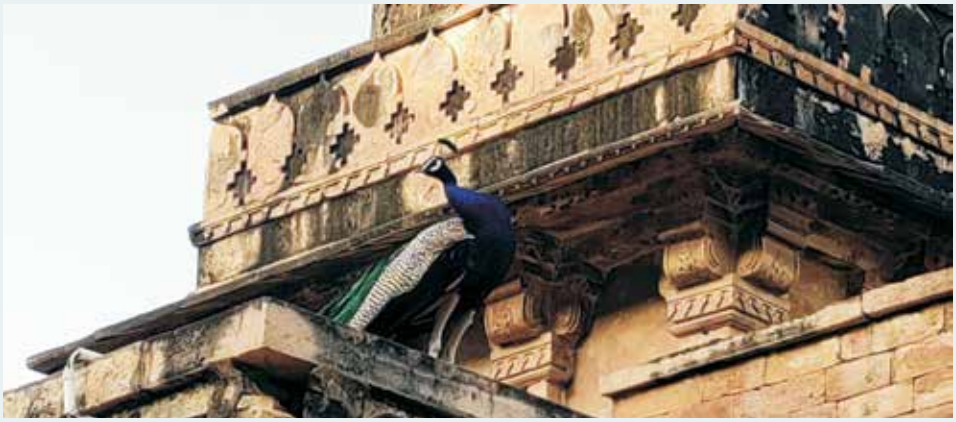

देश ने रतन खो दिया.....

उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है, जो यह सिखाती है कि सच्ची महानता केवल उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उन खुशियों में है, जो हम दूसरों के जीवन में भर सकते हैं।

आज देश ने एक ऐसा रतन खो दिया, जिसकी चमक से न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया रोशन हुई थी। रतन टाटा-एक ऐसा नाम जो समाज सेवा और उदारता के प्रतीक थे । उनके निधन की खबर से देश के हर कोने में शोक की लहर दौड़ गई है, और इस अपूरणीय क्षति से हर भारतीय दुखी है। ऐसा लग रहा है कि कोई अपने घर का चला गया ! वह सिर्फ एक सफल उद्योगपति नहीं थे, बल्कि एक सच्चे देशभक्त थे, जिन्होंने अपने कार्यो, सिद्धांतों, और मानवीय दृष्टिकोण से भारत की छवि को विश्व पटल पर गौरवान्वित किया।

सिंधिया विद्यालय के स्थापना दिवस पर मुझे रतन टाटा से बहुत ही निकट से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, और उनकी सादगी ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। उनके कर कमलों द्वारा मेरी बेटी अदिति को दिया गया पुरस्कार अविस्मरणीय रहेगा। जिस प्रकार उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया, उनका मार्गदर्शन किया इसके लिए हम उनके आजीवन आभारी रहेंगे । ऐसे महापुरुष कई युगों के बाद ही जन्म लेते हैं ।

जब भी देश पर मुसीबत आई, रतन टाटा सबसे पहले मदद के लिए आगे आए । चाहे वह २६/११ के मुंबई हमले के बाद ताज होटल के कर्मचारियों की सहायता का कार्य हो, या COVID-19 महामारी के दौरान देश की मदद के

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

लिए अपनी सेवाएँ देना। रतन टाटा ने बार-बार यह साबित किया कि वे केवल एक उद्योगपति नहीं थे, बल्कि एक दयालु, और उदार हृदय के व्यक्ति भी थे। उनका दिल देश के लिए धड़कता था, और हर कठिन परिस्थिति में उन्होंने भारत के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। आज रतन टाटा के जाने से देश ने केवल एक उद्योगपति नहीं खोया है, बल्कि एक मार्गदर्शक और एक सच्चे भारतीय को भी खो दिया है। उनकी जीवन यात्रा एक ऐसी रोशनी की तरह है, जो हमेशा हमें यह याद दिलाती रहेगी कि कड़ी मेहनत और विनम्रता के साथ हम समाज और देश में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है, जो यह सिखाती है कि सच्ची महानता केवल

आप से ही हमने सीखा है कि जीवन की सच्ची रोशनी दूसरों के अंधकार को दूर करने में है।

उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उन खुशियों में है, जो हम दूसरों के जीवन में भर सकते हैं।

रतन टाटा ने अपने जीवन से यह संदेश दिया कि अगर आपके दिल में समाज के प्रति सेवा की भावना है, तो आप न केवल अपने व्यवसाय को, बल्कि पूरे देश को भी ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं। उनके बिना यह देश आज कुछ अधूरा सा महसूस कर रहा है। लेकिन उनकी शिक्षाएँ, उनके आदर्श और उनकी मानवता का भाव हमारे साथ रहेगा, जो हमें सही दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाते रहेंगे।

सर, आप हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहेंगे। आपके जैसा महान व्यक्तित्व खोना एक युग के अंत जैसा है। आप जैसे व्यक्तित्व का जाना हम सभी के लिए ऐसी क्षति है, जिसे कभी भरा नहीं जा सकता। सिंधिया विद्यालय परिवार आपको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। अलविदा, सर ! हमेशा चमकते रहिए, हमारे दिलों में, एक प्रेरणा बनकर। आप से ही हमने सीखा है कि जीवन की सच्ची रोशनी दूसरों के अंधकार को दूर करने में है।

अलविदा भारत माँ के सपूत !
तुझे कोटि-कोटि नमन !

जगदीश जोशी
हिंदी विभाग

जयाजी सदन के विद्यार्थियों को एफिशियेन्सी शील्ड प्रदान करते हुए,
मुख्य अतिथि श्री रतन टाटा

यह किला है हमको प्यारा

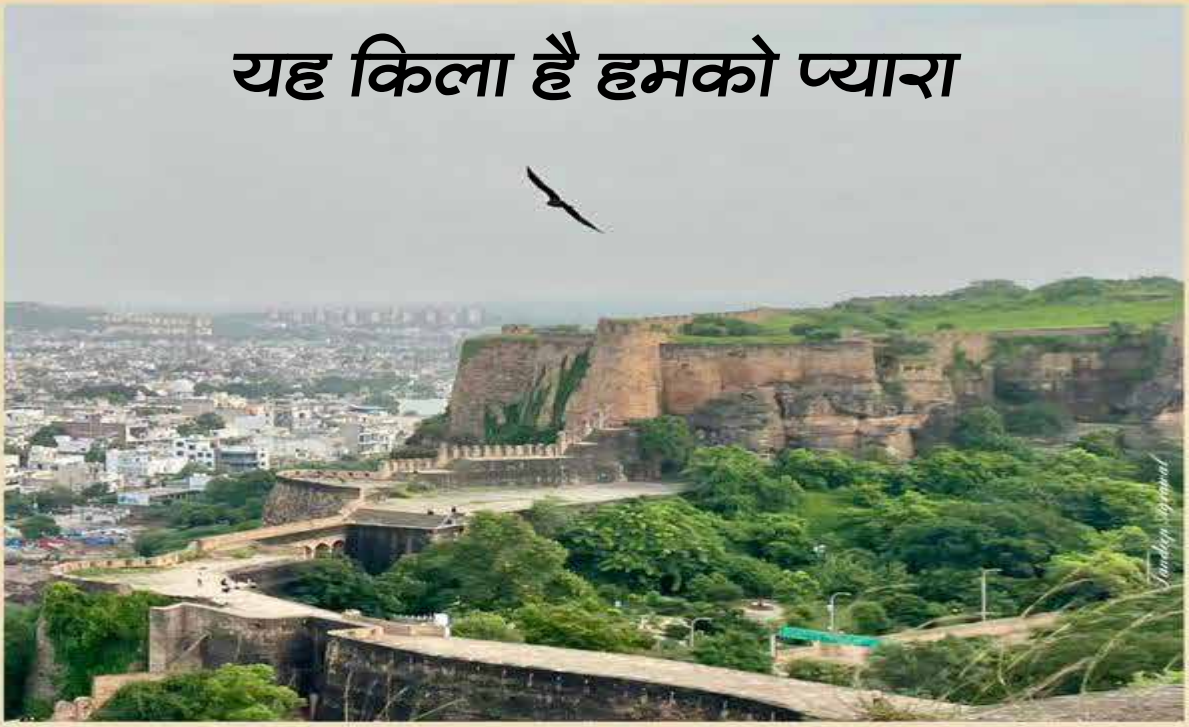

यह किला है हमको प्यारा, इसमें ही हम रहते हैं
विद्यालय तो है ही लेकिन, घर भी इसको कहते हैं
अलग अलग दिशा से आए, यहाँ एक हो जाते हैं
प्रांत पृथक हो, देश अलग हो, अब सिंधियन कहलाते हैं

अकस्मात् चोटें लगती हैं, कुश्ती भी हो जाती हैं
ये क्षण ही स्मृतियाँ बनकर तो, प्रतिपल याद सताती है
खेल-कूद से सीखा हमने, जीत और हार मनाने का
इन सब से ही शक्ति पाई, जीवन संघर्ष चलाने का

जब आए थे, अश्रु बिंदु तो खूब गिराए हमने थे
मालूम नहीं था कुछ ही दिन में, अनायास ये थमने थे
फूल और काँटे, पत्थरों से भी, करते हैं हम सबको प्यार
मन चाहे, ना बिसरें ये सब, आए यहीं हम बारंबार

सन्दीप अग्रवाल
१९८० शिवाजी

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

इकोलॉजी पार्क में अध्यापकों का भ्रमण

मेरा विद्यालय

मेरा विद्यालय तो अपने आप में एक अनूठी दुनिया है। शायद ही किसी अन्य विद्यालय में ऐसा सुन्दर खुशनुमा वातावरण हो जैसा मेरे सिंधिया स्कूल में है।

इससे पूर्व में इन्दौर में सेन्ट एरनॉल्ड स्कूल में पढ़ रहा था, जहाँ सुबह बस घर पर आती और स्कूल ले जाकर छोड़ देती। प्रेयर होती, फिर एक के बाद एक सात पीरिएड लगते जिसके बीच में 30 मिनट का लंच-इण्टरवल होता और यही हमारा मनोरंजन का एकमात्र समय होता। पाँच से दस मिनट में घर से टिफिन में लाया हुआ खाना झटपट खाकर बीस मिनट खेलने का मौका मिल जाता। और खेल भी क्या फुटबॉल ही मिलती थी जिसमें एक गेंद में कम से कम 30-४0 बच्चे लातें लगा रहे होते। बाकी खेलों पर तो बड़े बच्चों का कब्जा होता था और था भी क्या ले देकर एक एक कोर्ट बास्केटबॉल और बैडमिंटन का और एक टेबल-टैनिस की टेबल। बस, जब एक पीरिएड गेम्स होता, तब अपना मनपसंद खेल मिल जाता। छुट्टी होने पर, बस द्वारा घर लाकर पटक दिया जाता। और फिर शाम तक अन्दर कैद। घर के बाहर निकलते ही सड़क होने के कारण आती जाती गाड़ियों के कारण बाहर निकलने पर मम्मी पापा का लगाया हुआ प्रतिबंध।

जब मैं पहली बार यहाँ आया तो मुझे न जाने क्यों ऐसा लगा कि मुझे तो यहाँ रहना ही है, यहीं पढ़ना है। जब हमारी कार एक बड़े प्रवेशद्वार पर पहुँच कर खड़ी हो गई तो पापा ने बताया कि यह ग्वालियर फोर्ट का उरवाई गेट है, यहीं से ऊपर चढ़ा जाता है।

गेट पर ही एक चौक पोस्ट है जहाँ से यातायात नियंत्रित किया जाता है। वहाँ बैठे कर्मचारी ने इन्टरकॉम से ऊपर वाले गेट पर सूचित किया कि नीचे से एक गाड़ी निकाली है। अब जब तक हमारी गाड़ी ऊपर नहीं पहुँच जाती ऊपर से कोई गाड़ी नीचे की ओर नहीं छोड़ी जाएगी। मैं बड़ा हैरान था कि ऐसा क्यों हो रहा है लेकिन मेरी जिज्ञासा फौरन ही दूर हो गई जब मैंने देखा कि हमारी गाड़ी एक दुर्गम चढ़ाई चढ़ रही है। जहाँ सड़क की चौड़ाई एक वाहन के लिए ही बनी है और चढ़ाई लगभग खड़ी ९० डिग्री का कोण बनाती हुई। सभी के दिल धक्क-धक्क हो रहे थे। कार भी तीसरे गियर से, दूसरे पर आ गई और अन्त में तो पहले गेयर में रेंगती हुई ही चढ़ सकी। मेरे लिए यह एक रोमांचक अनुभव था।

स्कूल के विशाल लोहे के फाटक पर बड़े ही मुस्तैद जवान तैनात खड़े थे जिन्होंने हमारा अनुमति पत्र देखा और हमें प्रवेश दे दिया गया।

मुझे तो यहाँ आकर ऐसा लगा कि मैं किसी अद्भुत सपनों की दुनियाँ में आ गया हूँ। एक अतिआधुनिक विशाल हॉल मे हमें बैटरी से संचालित एक गाड़ी से जिसे टम-टम कहा जा रहा था, पहुँचाया गया। वहाँ हमारी तरह ही अनेक अविभावक अपने बच्चों के साथ विद्यमान थे जो एक दूसरे से परिचय और स्कूल के विषय में अपना-अपना ज्ञान बघार रहे थे। कुछ हमारी तरह बिल्कुल नये थे और कुछ के सम्बन्ध स्कूल के साथ पुराने थे क्योंकि उनके परिवार का कोई सदस्य या फिर वह स्वयं सिंधिया स्कूल में पढ़ चुके थे। हम जैसे पहली बार आए लोग, इन अनुभवी लोगों की बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे और स्कूल के अनुशासन, सुविधाएँ, देख-रेख, नियम और दिनचर्या के विषय में जानकर और अधिक प्रभावित होते जा रहे थे।

हम सभी को स्कूल की बस में बैठाकर स्कूल के प्रमुख स्थलों का अवलोकन कराया गया। पूरे स्कूल में शानदार पक्की सड़क बनी हुई है और सड़क के दोनों ओर खेल के शानदार व्यवस्थित बड़े-बड़े स्टेडियम और मैदान, दिल को लुभा रहे थे। तीरंदाजी का प्रांगण हो या शूटिंग रेन्ज सभी आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित हमें आमंत्रित करते नजर आए। क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी के अनेक मैदान हमें ओलम्पिक गाँव का एहसास करवा रहे थे। हमें ऑडीटोरियम, मैस, हैल्थ सेन्टर, जिम्नेजियम सभी जगह घुमाने के बाद जूनियर विंग में ले जाया गया जहाँ वास्तव में वे हाउस थे जिनमें से कोई एक हमें भी रहने के लिए आबंटित होना था। चार हाउस क्रमशः केडी,

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

नीमाजी, दत्ताजी और जनकोजी सभी लगभग एक जैसी ही सुख-सुविधाओं से सुसज्जित थे। प्रवेश करने पर हाउस -मदर या हाउस मास्टर का कार्यालय साथ में ही एक क्लासरूमनुमा प्रैपरूम जहाँ विद्यार्थी रात में नियमित रूप से अपनी पढ़ाई का रिवीजन, होमवर्क और स्वअध्ययन करते हैं। ऊपर की मंजिल पर है बच्चों के शयन कक्ष, प्रसाधन और स्नानागार। करीने से कतारबद्ध बच्चों के एक से साफ-सुथरे बिस्तर वाले पलंग यहाँ के भाईचारे का प्रमाण दे रहे थे। मैंने तो मन बना लिया कुछ भी हो मुझे तो यहीं रहना है, इसी स्कूल में पढ़ना है।

शाहरुख खान का एक संवाद है : ''अगर किसी चीज को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने में लग जाती है।''

बस हुआ भी कुछ ऐसा ही। मैंने इच्छा व्यक्त की और मम्मी-पापा ने भी तुरन्त हामी भर दी और नतीजा, मैं हो गया एरनोल्डियन से सिंधियन।

मैं तो एक नई दुनिया में था। मम्मी पापा से दूर लेकिन मन पक्का करके आया था और दृढ़ था मेरा निश्चय कि बिना शिकायत घर से, और घरवालों से दूर रहकर, डटकर पढ़ाई करूँगा और खेलकूद तथा अन्य गतिविधियों में हिस्सा लूँगा।

पहला दिन तो यूँ ही निकल गया। मम्मी पापा छोड़कर गए, कायदे-कानून बताए

गए, सारा सामान तरतीब से अपनी अलमारी में लगाया। हमारी देखभाल के लिए नाथू भैया और बहादुर भैया हैं उन्होंने हमें सिखाया कौन-सी चीज कहाँ रखनी है? यह ड्रेस सबसे ऊपर, रखो सुबह सबसे पहले यही पहननी है। उसी तरह क्रमवार कपड़े लगाना, कौन-सी चीज कहाँ रखनी है सभी कुछ बड़े प्यार से समझा दिया। एक दो ऐंठुओं को छोड़कर साथ के सभी बच्चे मिलनसार और सहयोगी प्रवृत्ति के लगे।

शाम ठीक सात बजे लाइनअप का आदेश हुआ और हम सभी हाउस के बाहर तैयार खड़ी हुई बस में एक-एक करके सवार हो गए। सबसे आखिर में हाउस-मदर चढ़ीं और बच्चों की गिनती की और ड्राइवर को गाड़ी चलाने का आदेश दिया। लो साहब हम पहुँच गए अपने मैस रात्रि के भोजन के लिए। यहाँ भोजन स्वयं ही लेना होता है, अपना मन पसंद भोजन लो बैठो और प्रेमपूर्वक खाओ। किसी पर कोई प्रतिबंध नहीं है वेज-नॉनवेज दाल-रोटी, चावल, सब्जी, सलाद, रायता जो खाना है जितना खाना है खाओ। मुझे तो भोजन बहुत ही अच्छा, घर जैसा लगा। न तो अधिक तेल-घी था न मसाले। सभी कुछ स्वादिष्ट था तो मैंने खूब मन भरके खाया।

आज प्रेप की छूट थी तो हमें टीवी देखने की अनुमति मिल गई। रात्रि ९:३० तक हमने टीवी देखा उसके बाद हमें बताया गया कि सुबह ६:०० बजे प्रातःकालीन फिटनैस के लिए लाइन-अप होगा अतः सुबह ५ बजे हमें जगा दिया जाएगा। अब हमें बिना विलम्ब किए सोना था। बत्तियाँ बुझा दी गई और हमें कब नींद आ गई पता ही नहीं चला।

अगले दिन सुबह ५ बजे भैया सभी को जगाने में लग गए। कुछ बच्चे तो फौरन उठकर टॉयलेट चले गए, कुछ ने थोड़ा नखरा किया और दो-चार तो ऐसे भी थे जिनकी आँखों पर भैया को गीला रुमाल छुलाना पड़ा। मैं तो अति उत्साहित था तो पहली आवाज में ही उठकर अपने काम में लग गया। खैर निर्धारित समय से पहले ही सभी बच्चे मॉर्निंग-फिटनैस की यूनीफॉर्म टी-शर्ट, निक्कर, पीटी-शूज पहनकर हाउस के बाहर लाइन में खड़े थे। गिनती हुई और हम एक-एक कर स्कूल बस में सवार होकर निर्धारित मैदान में पहुँच गए। यहाँ पर सभी कोच और खेल विभाग के अध्यक्ष मौजूद थे। आधा घंटा हमें जबर्दस्त रगड़ा लगाया गया

या दौड़ाया भी गया और खूब कसरत भी कराई गई, यह समझ लीजिए पूरा तेल ही निकाल लिया गया। अब पसीने से सराबोर हम वापिस आने के लिए लाइनअप हुए। वापस आते ही हम सभी को ४५ मिनट के अन्दर नहा-धोकर स्कूल यूनीफॉर्म में तैयार होकर फिर से लाइनअप होना था। हर बार की तरह गिनती और अटैण्डैंस हुई और हम पहुँच गए ब्रेकफास्ट, असेम्बली और नियमित क्लासों के लिए। मैस में ब्रेकफास्ट का तो मजा ही आ गया। गर्म-गर्म डोसे बनकर आते जा रहे थे, व्हाइट ब्रेड, ब्राउन ब्रेड, बड़े-बड़े डोंगों में अमूल बटर, जैम, बौइल्ड एग भर-भर कर रखे हुए थे। केले और सेव थे। कटे हुए पपीते थे। स्टील के कैम्फरों में दूध, चाय और काफी भरी हुई थी। नल खोलो और भर लो जो चाहो। घर में तो जबरदस्ती दूध पिलाया जाता था, यहाँ तो कॉफी पीने की भी आजादी थी। हालाँकि चाय सिर्फ टीचर्स ही पी सकते थे, बच्चे नहीं। मैंने तो दो दोडे खाए, दो अण्डे खाए, एक केला खाया और पूरा ग्लास भर के कॉफी भर ली। सच पूछो तो पेट नगाड़े की तरह फूल गया।

कक्षाओं के दौरान जब ग्यारह बजे तो बच्चों में कुछ हलचल कुछ सुगबुगाहट होने लगी। मैंने अपने साथ बैठे बच्चे से पूछा कि क्या बात है तो उसने बताया निहारी का समय हो गया है, आने ही वाली होगी। पता लगा कि दो वक्त सुबह ग्यारह बजे और और शाम ६ बजे के करीब निहारी मिलती है जिसकी प्रतीक्षा हर बच्चे को बड़ी बेसब्री से होती है। आज निहारी में एक बर्गर और पाइनैपल जूस आया, बहुत ही रिफ्रेशिंग था। १: ३० तक सभी पीरियड पूरे हो गए और हम पहुँच गए मैस लंच के लिए। आज लंच में रोज वाली रोटी-सब्जी, सलाद, रायता, पापड़ आदि तो था ही पर आज का मुख्य आकर्षण था कढ़ी और चावल, समझ लो मजा ही आ गया।

सवा दो बजे हम लंच से जैसे ही वापस आए तो सैट्स की तैयारी शुरु हो गई। यहाँ की एक खास विशेषता यह है कि हर कार्य के लिए एक अलग निर्धारित गणवेश है जो हर विद्यार्थी के लिए अनिवार्य होता है। हमारे पास बमुश्किल एक घंटे का समय था जिसमें सभी बच्चों को सैट्स के लिए तैयार होना था। मुझे पता नहीं था कि सैट्स है क्या बला तो मुझे बताया गया कि आपको अपनी रुचि के खेल का चयन करना होता है और सैट्स के दौरान आपको उसी खेल का प्रशिक्षण दिया जाता है और नियमित रूप से अभ्यास कराया जाता है। मैं अपने पिछले स्कूल में भी टेबिल टेनिस खेलता था तो मैंने टेबिल टैनिस में ही अपना नाम लिखाया।

सेट्स में तो मैंने औलम्पिक गाँव जैसा दृश्य देखा एक मैदान में सीनियर की हॉकी चल रही है और दूसरे में जूनियर की। कहीं धुँआधार फुटबॉल हो रही है कहीं बॉस्केटबाल, एक विशेष कवर्ड ऐरीना में तीरंदाजी, इन्डोर रेन्ज में पिस्टल और रायफल शूटिंग, स्क्वॉश का अलग कोर्ट है, स्विमिंग वाले अपने पूल में जल क्रीड़ाओं में लगे है, बैडमिंटन और टेबिल टैनिस के अलग ही इन्डोर हॉल हैं। घुड़सवारी का राइडिंग कोर्स तो दूर सूरज कुण्ड के समीप बनाया गया है। लॉन-टैनिस के लाइन से छः कोर्ट हैं। सभी लड़के अपने-अपने खेल में जी तोड़ पसीना बहाते हैं। सैट्स के बाद आते ही हम फटाफट नहाते हैं और अस्ताचल के लिए श्वेत वस्त्र यानि

सफेद कुर्ता-पजामा और काली सैंडिल पहनकर तैयार हो जाते हैं। शाम की निहारी आ चुकी होती है तो हम उसका सेवन करके अस्ताचल के लिए पहुँचते हैं। यह एक अद्भुत दृश्य होता है जब सामने सूर्यास्त हो रहा है और बच्चे एक सफल दिन के लिए सूर्य का आभार व्यक्त करते हैं और अनेक प्रार्थनाएँ करते हैं। अस्ताचल के बाद समय होता है रात्रि भोजन का जिसमें अस्ताचल वाली सफेद कुर्ता-पजामा वाली ड्रेस ही रहती है। बस फिर रोज की तरह रात्रि भोजन, प्रैप में पढ़ाई और गुडनाइट की तैयारी।

अभ्योदय शर्मा
कक्षा - ८

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

मेरी जर्मन यात्रा

मैं यहाँ उस यात्रा का विवरण प्रस्तुत करने आया हूँ जिसने जर्मनी में एक साँस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम में, मेरे सहित दस छात्रों के जीवन को बदल दिया। वीडेन में १६ गहन दिनों के दौरान, जिम्नेजियम स्कूल में १० छात्रों और २ शिक्षकों के अनुरक्षकों ने इस अद्भुत यात्रा में भाग लिया, हमने जर्मन संस्कृति के मिश्रण का अनुभव किया जिसने हममें से प्रत्येक पर एक अमिट छाप छोड़ी। शुरू से ही, हम कीम्सी झील, वाडाहल्ला संग्रहालय, ट्रेन संग्रहालय, बीएमडब्ल्यू वर्ल्ड, मोनचेन विश्वविद्यालय और एलियांज एरेना जैसी जगहों के समृद्ध इतिहास से मंत्रमुग्ध थे। प्राचीन महलों में समय के गलियारों से गुजरते हुए और एलियांज फुटबॉल स्टेडियम की भव्यता को देखकर आश्चर्यचकित होकर, हमने जर्मन इतिहास की नब्ज और खेल के प्रति इसके जुनून को महसूस किया। हमने हर दिन अलग-अलग पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद चखा और अनोखी बातचीत की, जिससे हम उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में डूब गए, जर्मन भाषा की बारीकियों और उनकी संस्कृति को परिभाषित करने वाले रीति-रिवाजों को आत्मसात कर लिया। इस अनुभव ने हमें सिखाया है कि भौगोलिक सीमाओं और साँस्कृतिक मतभेदों से परे, एक साझा मानवता है जो हम सभी को एकजुट करती है। जैसे ही हम घर लौटे, हम अपने साथ न केवल यादें लेकर आए, बल्कि विविधता के महान बैनर के प्रति गहरी सद्भावना भी लेकर आए।

रणवीर चौहान
कक्षा-दसवीं शिवाजी सदन

हर चीज जो मैंने यहाँ सीखी वो स्वयं में ही एक जिंदगी का पाठ था।

(स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि एवं पूर्व छात्र जस्टिस पंकज भाटिया से बातचीत)

स्वरित: सिंधिया स्कूल के सफर में कौन से गुण और हुनर सीखे जो आपको जिंदगी में काम आ रहे हैं?

जस्टिस पंकज भाटिया : हर चीज जो मैंने यहाँ सीखी वो स्वयं में ही एक जिंदगी का पाठ था। यहाँ मुझे अच्छे और बुरे दोनों अनुभव सीखने को मिले और जब सोसाइटी को लीड किया तो यही मेरे काम आये। यही मुझे आज दिखते हैं। लोगों ने तंग किया, लोगों ने हेल्प भी किया, लोगों ने स्वच्छ भी किया। जो हमने यहाँ सीखा वह लाइफ में बहुत काम आया, और जिंदगी हमें यही सिखाती है।

स्वरित : एक न्यायाधीश होने के नाते, अदालत में आपको किन दुविधाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

जस्टिस पंकज भाटिया : कोई दुविधाओं का सामना नहीं करना पड़ता था। अगर आप अपने काम में सुखी हैं तो आपको कभी भी वह काम बोझ नहीं लगता। अपराध की प्रवृत्ति में जो परिवर्तन हो रहा है, उसको समझने में थोड़ी दिक्कत होती है। अभी के संदर्भ में बात करें तो उन अपराधों को देखने पर नयी-नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो पहले नहीं थीं। उनको सुलझाने में थोड़ा-सा मजा आता है पर कोई दिक्कत नहीं आती।

स्वरित : भारत में कई हाईकोर्ट हैं और उन में हजारों-लाखों मामले अभी तक लंबित हैं। इस समस्या पर क्या कहेंगे?

जस्टिस पंकज भाटिया : इसके बहुत कारण हैं। एक तो न्यायाधीशों की संख्या कम है। मान लीजिये कि आपके यहाँ ६० से ७० शिक्षक हैं, अगर इनको ३० कर दिया जाए तो आप लोगों को क्या कष्ट आएँगे? वह शिक्षक सभी कक्षाओं को नहीं पढ़ा पाएँगे। किसी एक कक्षा को पढ़ाना होगा और कोई दूसरी को छोड़ना पड़ेगा। यह तो हो गया एक कारण। दूसरा कारण है कि अपराधों की प्रवृत्ति में परिवर्तन आ रहा है। अब बहुत सारे कार्य-कारणों को अपराध कह दिया गया है, जिन्हें पहले अपराध नहीं कहा जाता था। इसका मतलब यह है कि आपराधिक मामलों की संख्या बढ़ गयी है पर उस अनुपात में न्यायाधीशों की संख्या नहीं बढ़ी है। कई मामले जैसे- चेक बाउंसिंग पहले अपराध नहीं था, बाद में उन्होंने चेक बाउंसिंग को एक अपराध मान लिया है। अपराध मतलब १ करोड़ ३० लाख कानूनी मामले। उसके चक्कर में अगर न्यायाधीश नहीं पढ़ेंगे तो एक करोड़ ३० लाख मामलों के ऊपर एक करोड़ तीस लाख और आ जाएँगे। यह भी एक मुख्य बिंदु था। कानून के साथ दूसरे क्षेत्रों में पूर्णता आनी अभी बाकी है।

स्वरित : दसवीं कक्षा के बाद आज के छात्र जेईई, नीट, क्लैट जैसी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग सैंटर जाते हैं। आपको क्या लगता है कि अगर कोई छात्र १०वीं के बाद बोर्डिंग स्कूलों में रहकर ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षा में पढ़ाई जारी रखता है तो क्या वह ऐसी परीक्षाओं की तैयारी कर सकता है?

जस्टिस पंकज भाटिया : बिलकुल हो सकती है और ग्यारहवीं-बारहवीं में यहाँ बोर्डिंग स्कूल में रहकर और अच्छी तैयारी हो सकती है। ***विद्यार्थियों को जो कोचिंग में पढ़ाई करके, प्रतियोगी परीक्षाओं में जो लिखना है,वह यहाँ भी पढ़ाई करके हो सकता है। मगर यह बात समझनी होगी छात्राओं को कि परीक्षा में कैसे अपना संतुलन बनाकर रखना है वो यहीं से सीख सकते हैं।*** यहाँ पर जब वह विद्यार्थी खेल खेल रहा होता है, अपने सदन का काम कर रहा होता है, तो वह इस प्रक्रिया में अपना संतुलन बनाकर, जीवन जीने की कला सीखता है, जो हर विद्यालय नहीं दे सकता। ज्यादातर लोग, जिनको आता भी है वहाँ जाकर घबरा जाते हैं। उसके बाद आप कैसे अपने मन को शांत बनाये रख सकते हो इधर ही सीख सकते हैं ।

स्वरित : आपको कानून के क्षेत्र में आजीविका बनाने के लिए किससे प्रेरणा मिली?

जस्टिस पंकज भाटिया : कानून के क्षेत्र में हम जब पढ़ाई करते थे तो पढ़ाई होती नहीं थी। हमने पहले कानून की डिग्री ली, फिर उसके बाद कानून की असली दुनिया में कदम रखा। जैसे स्विमिंग पूल में किसी बच्चे को डाल दो तो वो धीरे-धीरे सीखता है, वैसे ही हमने सीखा। किसी ने हमें तकनीक नहीं सिखाई थी लेकिन कड़ी मेहनत करके एक चीज दिमाग में रखी कि किसी का नुकसान करके आगे नहीं बढ़ना, जो भी आपसे सलाह लेने आया है उसे सही सलाह देनी है। उसके बाद फिर सफलता स्वयं आपके पास आएगी। यही था मेरा सम्पूर्ण मंत्र है।

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

ठगों ने ठगा जजों को

कहानी मंचन स्पर्धा में जीता सिंधिया स्कूल

विगत १४ सितंबर को हिन्दी दिवस के अवसर पर लिटिल एंजल हाई स्कूल ने सृजन उत्सव आयोजित किया। इसमें पंचतंत्र की कहानी का मंचन, नुक्कड़ नाटक एवं वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। नगर के अन्य प्रतिष्ठित विद्यालयों के साथ-साथ सिंधिया स्कूल के छात्रों ने भी भाग लिया।

सिंधिया स्कूल के छात्रों ने पंचतंत्र की ठगों और ब्राह्मण कथा को प्रस्तुत किया। अरमान गुप्ता, रघुवीर कोचर, पुण्य राठी एवं चर्चित कृष्णा ने अपने अद्भुत अभिनय से दर्शकों को न केवल गुदगुदाया बल्कि उनका दिल जीत लिया। सिंधिया स्कूल की इस प्रस्तुति को लगभग बारह विद्यालयों में से सर्वश्रेष्ठ घोषित किया। सर्वश्रेष्ठ

अभिनय के लिए रघुवीर को 'श्रेष्ठ अभिनय' का प्रथम पुरस्कार मिला।

वाद - विवाद प्रतियोगिता में भी सिंधिया स्कूल ने अपनी धाक जमायी और पक्ष और विपक्ष दोनों में श्रेष्ठ वक्तव्य प्रस्तुत करके प्रथम पुरस्कार जीता। पक्ष में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार भी सिंधिया स्कूल के युवराज सेठिया ने जीता।

नुक्कड़ नाटक में वर्तमान परिवेश में हिन्दी की छवि विषय पर सिंधिया स्कूल की प्रस्तुति सराहनीय रही।

'स्वराज- एक क्रांतिकारी आन्दोलन

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर संगीत विभाग द्वारा ''स्वराज: एक क्रांतिकारी आन्दोलन" का सफल मंचन 'शुक्ल स्मृति मुक्ताकाशी मंच' पर किया गया, जो भारत की आजादी के लिए क्रांतिकारी नेताओं के संघर्ष और बलिदान को दर्शाता है । विद्यालय के छात्रों की इस बेहतरीन प्रस्तुति ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। देशभक्ति, निष्ठा और साहस से भरा यह नाटक युवाओं को अपने देश के प्रति जिम्मेदारी का एहसास कराता है। नाटक का मुख्य संदेश यह था कि स्वतंत्रता बिना बलिदान के प्राप्त नहीं होती।

विद्यालय के संगीत विभागाध्यक्ष श्री योगेश शर्मा द्वारा निर्देशित और स्कूल के कक्षा १२ के छात्र लक्ष्य शर्मा द्वारा लिखित इस नाटक में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह और स्वराज की माँग को बखूबी दिखाया गया। इसमें भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, और अन्य प्रमुख क्रांतिकारियों की भूमिका को विस्तार से दिखाया गया है, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

नाटक में क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण क्षणों को जीवंत करने में नाटक के सभी पात्र सफल रहे। प्रदर्शन की खासियत थी कलाकारों का जोशीला अभिनय, सटीक संवाद, और संगीत, जिसने माहौल को और भी जीवंत बना दिया। स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न घटनाक्रमों को दर्शाते हुए यह नाटक युवा पीढ़ी को देशभक्ति के प्रति प्रेरित करने वाला साबित हुआ। दर्शकों की प्रतिक्रिया उत्साहपूर्ण रही, और नाटक खत्म होते ही पूरे 'मुक्ताकाशी मंच' पर तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। विद्यालय के छात्रों ने इसे एक यादगार प्रस्तुति बताया ।

इस प्रस्तुति में भाग लेने वाले छात्र इस प्रकार हैं- लक्ष्य शर्मा (भगत सिंह), श्लोक शर्मा (सुखदेव), अंश मित्तल (राजगुरु), खुश तोड़ी (जेलर), रणवीर चौहान (बटुकेश्वर दत्त), अक्षत सिंह (चंद्रशेखर आजाद), वेदांत जोशी (जज), शौर्य जैन, अनहद जुनैजा (अँग्रेज), आर्यन राज (भगवती) राघव शर्मा (सूत्रधार), अन्य क्रांतिकारी -

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

आदर्श गुप्ता, नैतिक मोर, कमल नयन गुप्ता, आदिदेव गोयल (दृश्य-श्रव्य प्रतिनिधि) लक्ष्य शर्मा (पृष्ठभूमि संगीत)।

अंत में के प्राचार्य श्री अजय सिंह ने अपनी संक्षिप्त उद्‌बोद में सभी कलाकारों की भूरी-भूरी प्रशंसा की और कहा कि स्वराज एक क्रांतिकारी आन्दोलन नाटक ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम के वीरों को श्रद्धांजलि दी, बल्कि विद्यालय के छात्रों में देशभक्ति की भावना को भी प्रबल किया। उन्होंने भविष्य में इस प्रकार के नाटकों का आयोजन करने का भी अनुरोध किया।

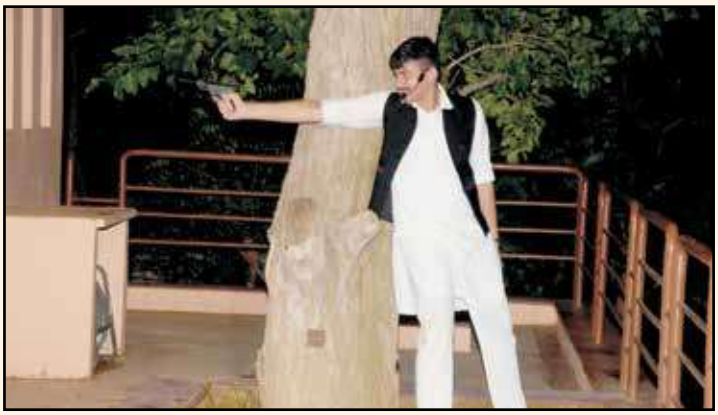

एक साहित्यकार व्यक्तित्व से साक्षात्कार

ग्रीष्मकालीन गृहकार्य के अंतर्गत मैंने आगरा के नेहरू नगर में, प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती सुधा शर्मा का साक्षात्कार लिया, जो हिन्दी साहित्य जगत में एक प्रतिष्ठित नाम है।

प्रश्न- आपको साहित्य में रूचि कब और कैसे जागृत हुई ?

उत्तर- मुझे साहित्य का शौक बचपन से है। मेरे पिता ने मुझे पढ़ने की आदत शुरू से डाली थी और उनके पुस्तकालय की किताबों को पढ़कर मैंने लिखने की ओर कदम बढ़ाया।

प्रश्न- आपकी प्रमुख रचनाएँ कौन-सी हैं?

उत्तर- मेरी प्रमुख रचनाओं में 'जीवन के रंग', 'प्रेम की पीड़ा' और 'समाज का दर्पण' शामिल है। ये कृतियाँ समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं और मानवीय भावनाओं को व्यक्त करती हैं।

प्रश्न- आपकी रचनाओं में आगरा शहर का कितना योगदान है ?

उत्तर- आगरे का मेरे जीवन और लेखन पर गहरा प्रभाव है। यहाँ की संस्कृति, धरोहर और यहाँ के लोगों का जीवन मेरी कहानियों और कविताओं में झलकता है।

प्रश्न- आपके अनुसार, आज के समय में साहित्य का समाज पर क्या प्रभाव है?

उत्तर- साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य को समाज को जागरूक करने और नई दिशा देने का काम करना चाहिए। आज भी साहित्य के माध्यम से हम समाज की समस्याओं को उजागर कर सकते हैं।

प्रश्न- आपकी आगामी योजनाएँ क्या है ?

उत्तर- मैं भविष्य में युवाओं को प्रोत्साहित करना चाहती हूँ और एक साहित्यिक संस्था का गठन करना चाहती हूँ, जहाँ नए रचनाकारों को अपने विचार और रचनाएँ प्रस्तुत करने का अवसर मिले।

नील अग्रवाल
कक्षा-नौवीं,
माधव सदन

जब एक बच्चे को भूख से बिलखते हुए देखा।

एक दिन शनिवार को मैं शिवमंदिर गई थी। शिव मंदिर के बाहर बहुत सारे गरीब लोग थे। उसमें से एक औरत का बच्चा भूख से बहुत रो रहा था।

उसकी माँ सब लोगों से कुछ खाने के लिए माँग रही थी, लेकिन कोई उसे कुछ नहीं दे रहा था। मुझे उस बच्चे की हालत देखकर आँखों में आँसू आ गए।

मैंने उसे पाव-भाजी के स्टॉल से पाव-भाजी लाकर दी। वह बच्चा पाव-भाजी देखकर बहुत खुश हुआ। वह बच्चा पाव-भाजी खाकर खेलने लगा। मुझे उसे देखकर बहुत खुशी हुई। उसकी माँ ने मुझे आशीर्वाद दिया।

मुझे उस हँसते हुए बच्चे को देखकर बहुत अच्छा लगा। मैं अपनी मम्मी के साथ मंदिर गई थी। इसलिए मेरी मम्मी ने सब देखा और मुझे शाबाशी दी।

हंसिता मानकर
कक्षा-सातवीं स, रानोजी सदन

मेरी जिन्दगी

था कभी मैं भी एक बच्चा
पता नहीं क्या-क्या किया

याद आते हैं वो दिन
जब मम्मी गोद में रखें सिर

फिर धीरे-धीरे हुआ बड़ा
धीरे-धीरे चलने लगा

अब तो हो गया थोड़ा बड़ा
पर फिर भी हूँ एक बच्चा
माँ के सामने हूँ हमेशा बच्चा।

विश्वजीत सिंह
कक्षा-आठवीं स, जनकोजी सदन

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

अनोखा कक्षाकार्य : अनोखी माँग

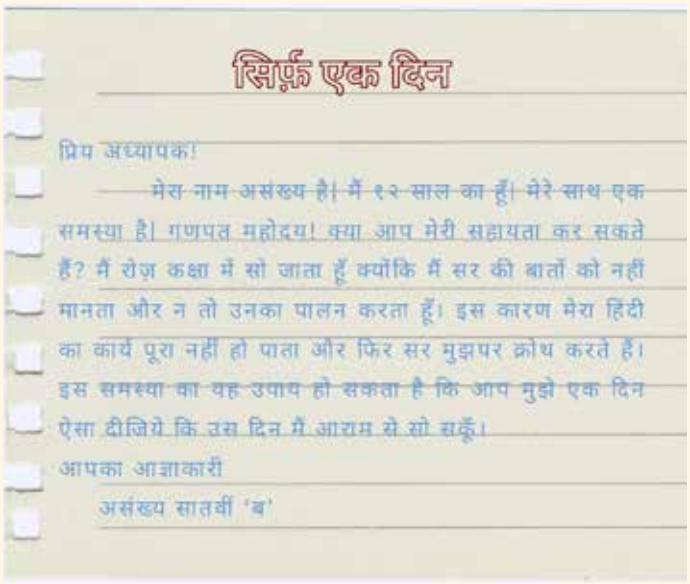

सिर्फ़ एक दिन

प्रिय अध्यापक!

मेरा नाम असंख्य है। मैं १२ साल का हूँ। मेरे साथ एक समस्या है। गणपत महोदय! क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं? मैं रोज़ कक्षा में सो जाता हूँ क्योंकि मैं सर की बातों को नहीं मानता और न तो उनका पालन करता हूँ। इस कारण मेरा हिंदी का कार्य पूरा नहीं हो पाता और फिर सर मुझपर क्रोध करते हैं। इस समस्या का यह उपाय हो सकता है कि आप मुझे एक दिन ऐसा दीजिये कि उस दिन मैं आराम से सो सकूँ।

आपका आज्ञाकारी

असंख्य सातवीं 'ब'

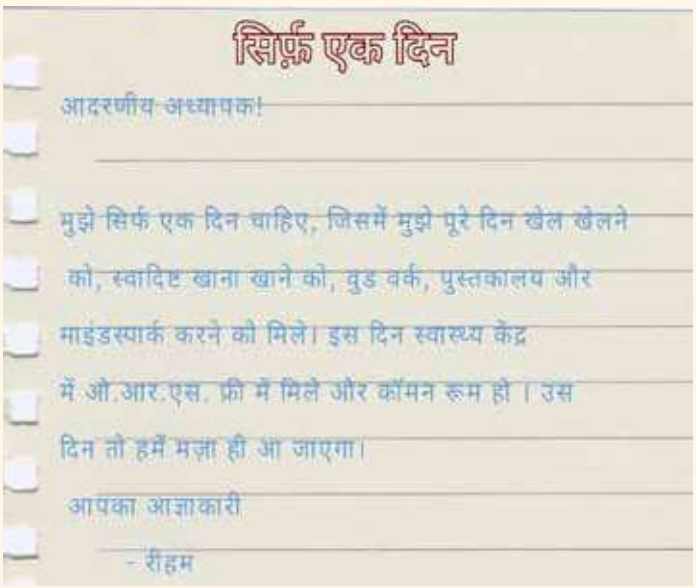

सिर्फ़ एक दिन

आदरणीय अध्यापक!

मुझे सिर्फ एक दिन चाहिए, जिसमें मुझे पूरे दिन खेल खेलने को, स्वादिष्ट खाना खाने को, वुड वर्क, पुस्तकालय और माइंडस्पार्क करने को मिले। इस दिन स्वास्थ्य केंद्र में ओ.आर.एस. फ्री में मिले और कॉमन रूम हो। उस दिन तो हमें मज़ा ही आ जाएगा।

आपका आज्ञाकारी

- रीहम

कक्षा में पीछे बैठकर कलाकारी

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

भव्य जैन, कक्षा-ग्यारहवीं , जयप्पा सदन

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

हिन्दी की अभ्यास पुस्तिका : अर्जुन खर्ब, कक्षा-नौवीं

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

ग्रीष्मकालीन गृहकार्य

भावनी जैन

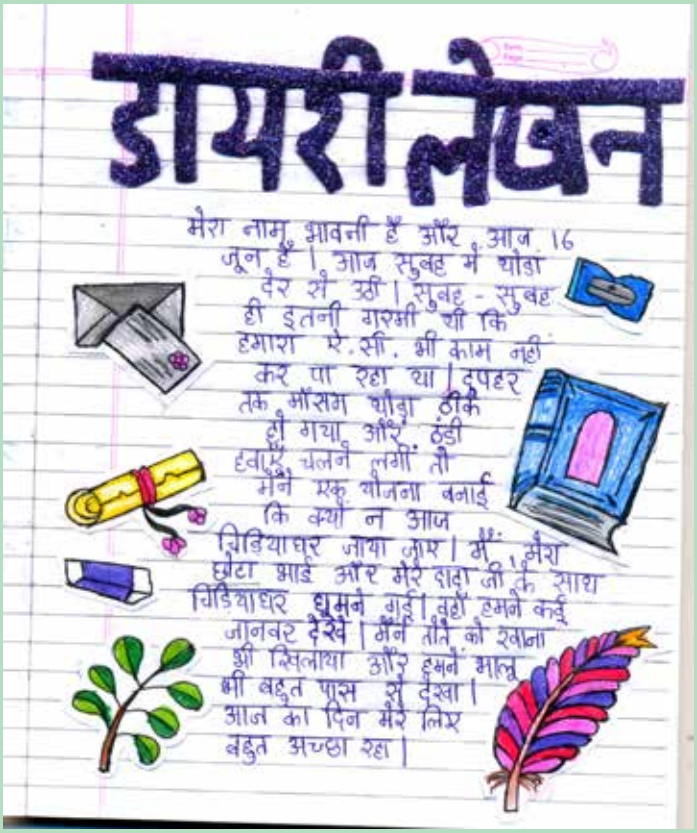

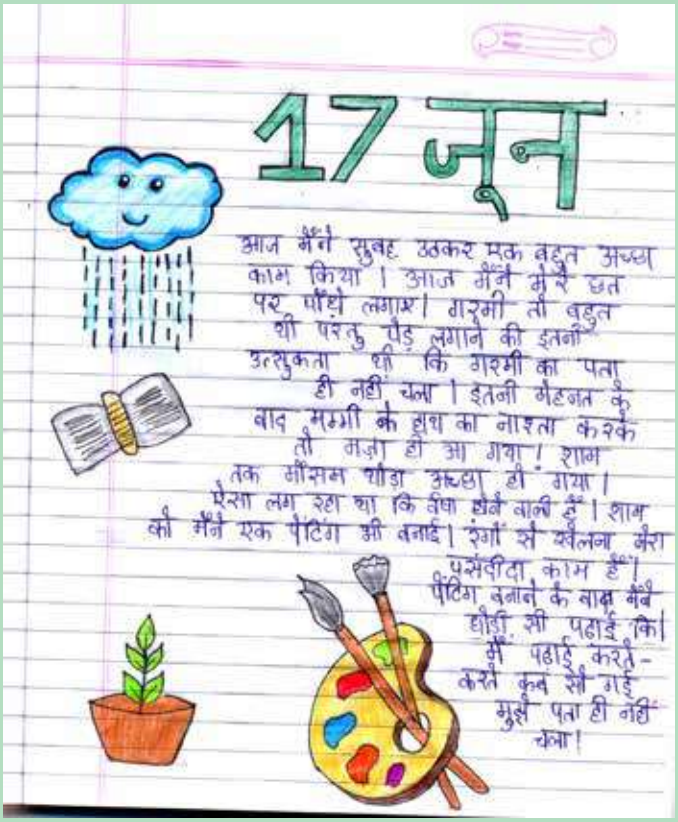

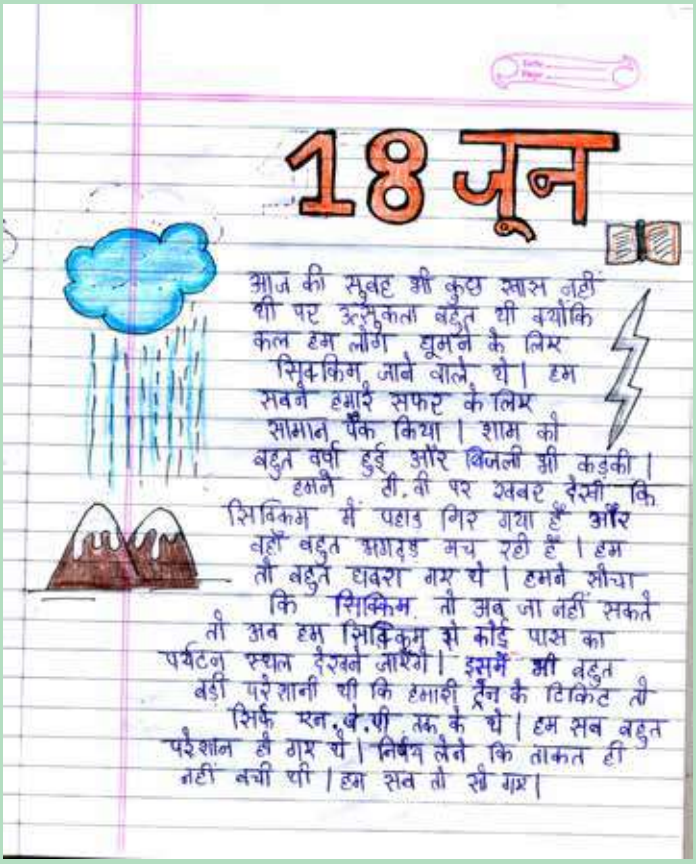

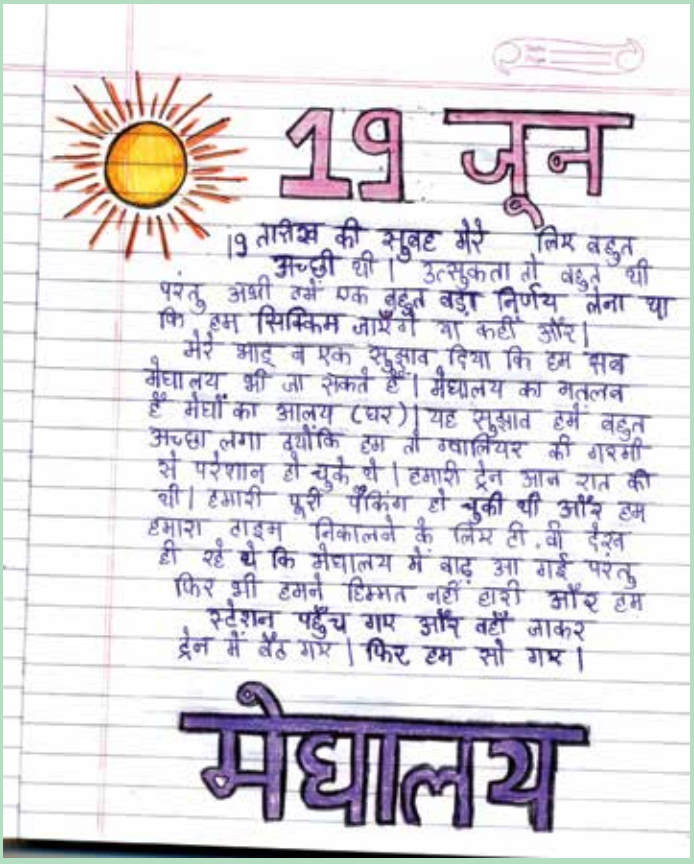

हिंदी साहित्य सभा के कार्यक्रम

रंगमंच : अभिज्ञान शाकुंतलम्

२२ अप्रैल २०२४ को हिंदी साहित्य सभा के विद्यार्थियों ने शुक्ल स्मृति मुक्ताकाश रंगमंच पर महाकवि कालिदास की कालजयी रचना "अभिज्ञान शाकुंतलम" का जीवंत मंचन किया। कार्यक्रम में प्राचार्य अजय सिंह, मुख्य अतिथि आशीष गोलवलकर (पूर्व कंटेंट हेड- सोनी इंडिया), उप प्राचार्या स्मिता चतुर्वेदी, अनामिका सिंह, बर्सर कर्नल डीके फरशवाल, डीन- आईसीटी राज कपूर, सहपाठ्यचर्या गतिविधियों के डीन धीरेन्द्र शर्मा, प्राध्यापक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

महाकवि कालिदास ने पाँचवीं शताब्दी में महाभारत के आदिपर्व की एक कथा पर आधारित "अभिज्ञान शाकुंतलम" नाटक लिखा था। यह विश्व प्रसिद्ध नाटक संस्कृत रंगमंच की शास्त्रीय नाट्य परंपरा का अनूठा उदाहरण है। इसमें शास्त्रों और रचनात्मक लेखन का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इस नाटक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसका अनुवाद दुनिया की लगभग हर भाषा में हो चुका है और पाश्चात्य विद्वानों ने महाकवि कालिदास की विद्वता की मुक्त कंठ से सराहना की है। मूल नाटक संस्कृत में है और इसके हिंदी भाषा में कई अनुवाद हुए हैं।

विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अपेक्षाकृत सरल भाषा में लेखक विराज द्वारा अनूदित कृति को मंचन के लिए चुना गया। यह नाटक सुखों के राजा 'श्रृंगार' से सुसज्जित है और प्रेम के जल से सराबोर है। इसमें साधु नम आँखों से गृहस्थ-धर्म का पाठ पढ़ाते नजर आते हैं। इसमें जंगली जानवरों और पेड़-पौधों का मनुष्यों के प्रति प्रेम दिखाया गया है। सबसे बढ़कर शकुंतला के प्रेम की विलक्षणता को दिखाया गया है। दुष्यंत की विस्मृति के कारण वह अपमानित होती है और कष्ट झेलती है, लेकिन अंत में दुष्यंत और शकुंतला का पुनर्मिलन होता है और नाटक का सुखद अंत होता है।

विनायक कपूर
(संयुक्त सचिव हिंदी साहित्य सभा)
कक्षा- १२

अन्तर्सदनीय हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता

६ फरवरी २०२४ को हिंदी साहित्य सभा द्वारा माध्यम वर्ग अन्तर्सदनीय हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें सारे सदन २ भागों में बाँट दिये गये थे पूल-ए व पूल-बी जिनमें अलग-अलग विषयों पर सभी वक्ताओं ने अपने प्रभावी विचार व्यक्त करे। वाद-विवाद के दौरान सभा सभासदों को मत के सभी सामाजिक, राजनैतिक, आदि जैसे परिप्रेक्ष्यों से अवगत कराया। प्रतियोगिता में जयप्पा सदन के प्रतिभागियों ने अपने तार्किक कौशल से प्रथम स्थान प्राप्त किया। पूल-ए में शिवाजी सदन के खुश तोड़ी सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे, वहीं जयाजी सदन के कुमार अभीक्षित नारायण ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। पूल-बी में जयप्पा सदन के प्रणव अगरवाल को सर्वोत्तम वक्ता के पद से नवाजा गया और अनिरुद्ध यादव व वरद अग्रवाल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

२३वीं महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति अंतर्विद्यालयीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी स्वर्गीय महाराजा माधवराव सिंधिया जी की पुण्य स्मृति में सिंधिया स्कूल, दुर्ग ग्वालियर में अंतर्विद्यालयीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

किया गया। जो २००१ में उनकी स्मृति एवं उनके हिन्दी भाषा-प्रेम को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए, श्रद्धांजलि स्वरूप संस्थापित की गई थी। इस प्रतियोगिता में हमारे देश के सभी प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित विद्यालय भाग लेते हैं और उनके तीन सर्वोत्तम प्रतिनिधि प्रतियोगी अपना श्रेष्ठ योगदान देकर, इस प्रतियोगिता को सफल बनाते हैं।

इस हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का प्रथम चक्र ऑक्सफोर्ड पद्धति पर आधारित था, जिसमें १० विद्यालयों ने भाग लिया, और सभी ने द्वितीय चक्र के लिए अर्हता प्राप्त की। द्वितीय चक्र टर्न कोट पद्धति पर आधारित था, जिसमें

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

प्रत्येक विद्यालय से २ प्रतिभागियों ने भाग लिया व तृतीय प्रतियोगी को प्रथम ''बुनो कहानी, कहो जुबानी'' में भाग लेने का अवसर मिला।

''बुनो कहानी, कहो जुबानी'' प्रतियोगिता के प्रथम चरण में सभी प्रतिभागियों ने रचनात्मकता व सृजनात्मकता को अपनी कलम से सींचते हुए, एक कहानी की रचना कर, अगले दिन प्रतियोगिता के द्वितीय चरण में अपनी जुबानी प्रस्तुत किया।

हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता के दोनों चरणों के अंकों के आधार पर ६ विद्यालयों ने अंतिम यानि न्यास चक्र में प्रवेश किया जो कि कैंब्रिज पद्धति पर आधारित था। इस वाद-विवाद का विषय था- ''पर्यावरण संरक्षण के लिए देशों को पर्यटकों की संख्या सीमित कर देनी चाहिए।'' जिस पर सभी प्रतिभागियों ने अपने विचार बहुत ही सुंदरता के साथ प्रस्तुत किये और सभा को विषय की बारीकियों से परिचित कराया। प्रतियोगिता के परिणाम घोषित करने से पहले, सभी निर्णायकों ने प्रतिभागियों को बेहतर बनाने के लिए, प्रतिभागियों की वाणी एवं भाषा पर सटीक टिप्पणी

की ताकि छात्रों को अपनी गलतियाँ सुधारने में मदद करेंगी।

अंततः, बहुप्रतीक्षित घड़ी खत्म हुई और द सिंधिया स्कूल के प्रतिभागियों ने माननीय मुख्य अतिथि श्री बी. एस. भाकुनी के कर कमलों से २३वी श्रीमंत महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति अंतर्विद्यालयी हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता की चल वैजयंती प्राप्त की। वहीं वसंत वैली स्कूल, नई दिल्ली द्वितीय स्थान पर रहा। प्रथम चक्र में सिंधिया स्कूल के विवेक सिंह और वसंत वैली की रितिका पँवार व द्वितीय चक्र में वसंत वैली की अमायरा खेर को सर्वश्रेष्ठ वक्ता के खिताब से नवाजा गया। वहीं न्यास चक्र में पक्ष से, सिंधिया स्कूल के तनिष अग्रवाल व विपक्ष से रितिका पँवार को सर्वोत्तम वक्ता के पुरस्कार के सम्मानित किया और सर्वश्रेष्ठ खंडन/तर्क कौशल के लिए वसंत वैली की अमायरा खेर को पुरस्कृत किया।

इसी श्रृंखला में, २३वीं महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति अंतर्विद्यालयीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजन के अंतर्गत प्रथम ''बुनो कहानी, कहो जुबानी'' में पाइनग्रोव स्कूल, सुभाथु से यामिनी सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस गरिमामय अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि श्री बी.एस. भाकुनी जी ने अपने शुभ आशीर्वचनों से सभी विद्यार्थियों व प्रतिभागियों को प्रेरित किया।

अंतर्सदनीय हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता

विद्यालय में कनिष्ठ वर्ग अंतर्सदनीय हिंदी वाग्मिता प्रतियोगिता दिनांक ५ फरवरी २०२४ को आयोजित की गई। प्रत्येक सदन से चार-चार (दो गद्य, दो पद्य खंड) प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें उच्चारण, व्याकरण, शैली, लहजा और प्रभावी वक्तव्य जोर दिया जाता है। यह प्रतियोगिता सभी प्रतिभागियों के विकसित संप्रेषण कौशल का प्रमाण है। इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ कर, प्रथम स्थान दत्ताजी सदन ने प्राप्त किया है। पद्य खंड में सर्वोत्तम वक्ता का खिताब अपने नाम किया, कृष्णम बाजौरिया ने, वहीं हर्षप्रीत कौर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। गद्य खंड में पर्व गोयल सर्वश्रेष्ठ वक्ता व युवराज सिंह सिकरवार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अन्तर्सदनीय हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग)

अन्तर्सदनीय हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) २७ जनवरी २०२४ में हिंदी साहित्य सभा द्वारा आयोजित की गई थी। जहाँ नन्हें-नन्हें प्रतिभागियों ने अपने तर्कों व प्रश्नों से निर्णायक मंडल को भी सोचने पर मजबूर कर दिया। दिए गए विषय पर सभी प्रतिभागियों का तथ्यात्मक वक्तव्य सुन सभी सभासद दंग रह गए। इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति लिए नीमाजी सदन को प्रथम स्थान से नवाजा गया। जिसमें मृगांक शेखर सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे, वहीं सूर्यांश प्रताप सिंह व अरहन जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अंतर्सदनीय हिन्दी वाद-प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग)

विद्यालय में अंतर्सदनीय हिन्दी वाद-प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग) दिनांक २७

अगस्त २०२४ को आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता हमें अपने विचारों को तर्कपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करना सिखाती है और प्रतिपक्ष का सम्मान करते हुए उनके परिप्रेक्ष्य को भी समझना होता है, जिससे तार्किक सोच और तथ्यात्मक क्षमता विकसित होती है। वक्ताओं की विचारों की जोशीली प्रस्तुति काफी प्रभावी थी। अंतिम चक्र में जयाजी सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिसमें पक्ष के सर्वोत्तम वक्ता रहे, दौलत सदन के विवेक शर्मा, विपक्ष से जयाजी सदन के अयान अगरवाल और सर्वश्रेष्ठ खंडन-कौशल के लिए शिवाजी सदन के आर्यन भगत को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी प्रश्नमंच : कौन बनेगा सिरमौर

९ मार्च २०२४ को कनिष्ठ वर्ग के

लिए ''कौन बनेगा सिरमौर'' का हिंदी प्रश्नमंच आयोजित किया गया। जहाँ सभी प्रतिभागियों ने सिरमौर की उपाधि के लिए प्रतिद्वंदी मित्रों को पराजित करने के लिए जी तोड़ प्रयास किया। अंतिम चक्र में केवल नीमाजी सदन से हर्षप्रीत कौर ने प्रवेश किया, जिनके समक्ष अमीर खुसरो की पहेली-**मुँह पर पानी छिड़का क्यों? सुनार खाली बैठा क्यों?** प्रस्तुत की गई, जिसका वह दुर्भाग्यवश उत्तर नहीं जुटा पायी। इसलिए, सभी चरणों के के आधार नीमाजी सदन के कोविद कश्यप को छठवीं ''कौन बनेगा सिरमौर'' हिंदी प्रश्नमंच का सिरमौर घोषित कर दिया गया। इस दौरान हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री मनोज कुमार मिश्रा ने इस प्रश्नमंच प्रतियोगिता में सभाध्यक्ष की भूमिका निर्वाह की, वहीं प्रतियोगिता के पर्यवेक्षक श्री जगदीश जोशी थे। इस अवसर पर वरिष्ठ हिन्दी अध्यापिका श्रीमती रक्षा सीरिया भी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। अंत में प्राचार्य महोदय ने प्रतियोगिता के परिणाम साझा किए, जिसमें नीमाजी सदन ने प्रथम स्थान, जनकोजी ने द्वितीय, दत्ताजी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके पश्चात प्राचार्य श्री अजय सिंह ने सभागार के सभी सभासदों को संम्बोधित करते हुए हिंदी जैसी अनमोल भाषा को सहेजने का आग्रह किया।

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

प्रिय डायरी!

आज मैं सुबह ७ बजे उठ गया, क्योंकि आज रेडिसन होटल में मेरे पिताजी की कंपनी की १५वीं वर्षगाँठ मनाने की पार्टी आयोजित हुई थी और मुझे उसमें जाना था। कार्यक्रम में कई कंपनी के मुख्य लोग और कर्मचारी भी शामिल हुए। हमने कई खेल खेले और तैराकी की। उसके बाद हम अपनी नई गाड़ी मर्सडीज जी.एस.एल ३५० लेने के लिए शोरूम गए। उस समय मुझे नई गाड़ी मिलने की बहुत खुशी हुई। उसके बाद मैं घर गया और २ घंटे सोया। फिर मैं उठा और अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेलने चला गया। खेलकर मैं घर आया, खाना खाया और अपने परिवार के साथ ३ घंटे फिल्म देखने के बाद मैं बिस्तर पर चला गया और सो गया।

शुभ रात्रि डायरी !

प्रिय डायरी!

आज सुबह ६ बजे मैं टोक्यो पहुँचा। टोक्यो बहुत मनोरंजक लगा। वहाँ टोक्यो सेंसोजी टेम्पल, टोक्यो टावर और टोक्यो स्कैटरी देखा जो दुनिया का सबसे पहला ऊँचा टावर देखने का प्लान था। यहाँ से कोई भी २०० किमी की दूरी से माउंट फूजी देख सकता है। शिबुया क्रॉसिंग पर प्रतिदिन चारों दिशाओं से हज़ार लोग इसे पार करते हैं। इसके बाद मैं और मेरा परिवार हवाई अड्डे पर तरोताज़ा हुए और ट्रेन पकड़कर हैरी पॉटर स्टूडियो देखने गए। मैं जो भी चीज़ें चलचित्रों में देखता था, वो अब असल ज़िंदगी में देखने को मिला। वहाँ से हमने हैरी पॉटर की ड्रेस खरीदी और बटर बिटर भी पी। फिर हम लोग होटल जाकर सो गए। यह दिन बहुत व्यस्त था।

शुभ रात्रि !

प्रिय डायरी!

आज मैं सुबह ८ बजे उठा। आज मैं टोक्यो स्काईट्री, सेंसोजी टैम्पल और नारा डीयर पार्क गया था। सबसे पहले हम लोग टोक्यो स्काईट्री गए थे। वहाँ मैंने आइसक्रीम खायी और सेंसोजी टैम्पल के लिए निकल गए। सेंसोजी टैम्पल पहुँचकर ऐसा लगा कि जन्नत पहुँच गया था। वह मंदिर बहुत खूबसूरत है और वहाँ सबसे ज्यादा टोना मछलियाँ पायी जाती हैं। उसके बाद हम लोग पूरा घूमकर वापस होटल आ गए और सो गए।

शुभ रात्रि !

२२ जून, २०२४
बुधवार, रात्रि ९:१५ बजे

प्रिय डायरी

पाँच जून को मेरा जन्मदिन आता है। मैं अपने परिवार के साथ खुली हुई जिप्सी में जंगल भ्रमण करने गया था। काफी समय भ्रमण करने के बाद दूरबीन से हिरण, जंगली हाथी, शेर और भिन्न प्रकार के पशु-पक्षी देखे। मैंने नैनीताल और जिम कारबेट में बहुत अच्छा खाना खाया। मेरा यह सफर यादगार और मज़ेदार रहा।

शुभ रात्रि !

विख्यात भूटानी

हिन्दुस्तान का झंडा

पार्थ ने माँ से पूछा,
"क्या है यह कपड़े का टुकड़ा
कि सब देखकर सावधान हो जाते ?
क्या है यह रंगबिरंगा कपड़ा ?
क्या है यह नीला चक्र के साथ
केसरी और हरे रंग का कपड़ा?
क्या है यह झंडा ?"

माँ बोली, "यह है हिन्दुस्तान का झंडा।
हिंदुस्तान की शान ,
लहराता हुआ झंडा।
यह है हमारी आज़ादी का प्रतीक ,
यह है सुंदरता की धारा,
सब लगाते हैं इसका नारा।
केसर अपने देश की आग,
हरा अपनी सेना की पहचान,
नीला चक्र हमारे देश की शान।
बोलो वन्दे मातरम् !

कृषव अग्रवाल , ७ - 'बी'
जनकोजी सदन

मैं खेलने जाता हूँ

हर दिन मैं खेलने जाता हूँ
दोस्तों के साथ खेलता हूँ, सोचता हूँ
कि मैं जो इतना खेलता हूँ,
क्या मैं बड़ा होकर खेल पाऊँगा ?
क्या वह मेरे दोस्त जिनके
साथ मैं खेलता था रहेंगे?
जिस चीज़ के लिए मैं मरता था,
क्या मैं अभी भी उतने ही उत्साह से
उसके लिए मरूँगा ?

क्या स्वयं में उतना ही जोश रहेगा?
क्या मैं अपने देश के लिए खेलकर
अपने देश का नाम रोशन करूँगा,
क्या मैं अपने माता-पिता का नाम
ऊँचा रख पाऊँगा?

- कबीर त्रिपाठी

कक्षा में हम

'यूट्यूब' को आता है!

कक्षा में राहुल सर ने पूछा कि नाच-गाना किसे आता है?
स्वराज ने कहा सर हमारे-अपने 'यूट्यूब' को आता है, लगा दूँ?

चिल्ला कौन रहा है?

अध्यापक कक्षा में आकर बोले, 'चिल्ला कौन रहा है?'
मानस ने कबीर का और स्वराज ने मानस का नाम कहा। इसी तरह सब एकदूसरे का नाम लगाते रहे और आधे से ज्यादा समय इसी में बीत गया और फिर पाँच मिनट में सर चले गए।

बच्चे कहाँ हैं?

मैं कक्षा में गलती से सो गया और जब जागा तब पता चला कि छह बच्चे ही कक्षा में थे। इस कारण मैंने पूछा कि बच्चे कहाँ हैं?
एक दोस्त ने कहा कि सब पुस्तकालय गए हैं। मैं समझ गया कि यह सब कक्षा में रहना नहीं चाहते और कोई मुझे ले जाना नहीं चाहता। उस दिन सबकी असलियत दिख गयी।

मानस शर्मा ७ - 'सी' दत्ताजी

मेरी प्रिय दैनंदिनी!

आज सुबह हम लोग एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। हिरोशिमा से भारत की उड़ान का समय १० बजे का था तो हम ६ बजे पहुँच गए। एयरपोर्ट पहुँचने के बाद हमनें जल्दी से चेक-इन करा लिया। फिर २ घंटे इंतज़ार करने के बाद सूचना मिली कि हमारे विमान की बोर्डिंग शुरू हो चुकी है। विमान में बैठने के बाद उड़ान ठीक आधे घंटे बाद विमान ने भर ली। हमारा सफर १४ घंटे का था जिसके दौरान मैनें माउंट फूजी देखा और शहर का उत्कृष्ट नज़ारा लिया। सफर ख़तम हुआ, हम भारत पहुँचे और घर जाकर सो गए।

तुम्हारा अपना
दक्ष माहेश्वरी

तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते। तेज की वय नहीं देखी जाती।।

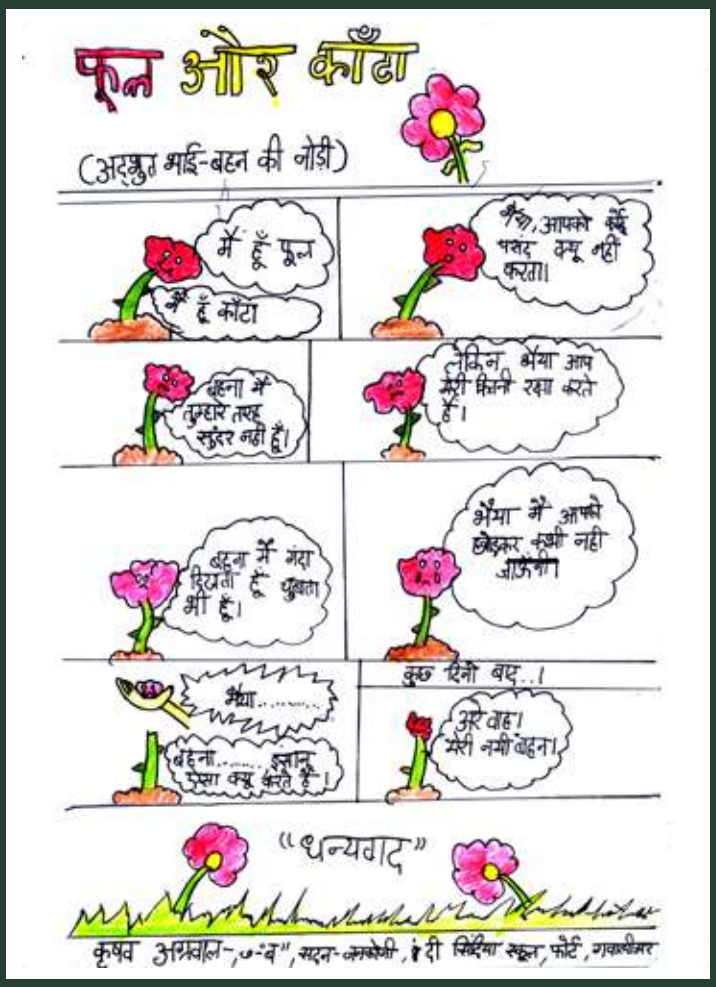

धरती

इस धरती में पेड़ बहुत हैं,
पानी है, पर थोड़ा।

मत काटो इन पेड़ों को
वरना हो जाएगा पानी ख़तम।

पानी ही जीवन देता है,
पानी ही दम देता है।

मत काटो इन पेड़ों को
वरना हो जाएगा पानी ख़तम।

असंख्य सिंह ७ - 'बी' नीमाजी सदन

मेरी प्रिय दैनंदिनी!

आज मैं जापान के हिरोशिमा शहर घूमने गया था। हिरोशिमा में दुनिया की सबसे तेज़ बुलेट ट्रेन में बैठे। फिर मैं और मेरा परिवार एक फेयरी लेकर एक छोटी-सी जगह पर आ गए, वहाँ पर हमनें तैरता हुआ मंदिर देखा जिसके भीतर बुद्धजी की अस्थियाँ रखी हुई थीं। फिर हम लोग हिरोशिमा के संग्राहलय में गए और देखा कैसे वहाँ पर एटम-बम्ब गिरा था। यह सब देखकर हम लोग अपने होटल आ गए क्योंकि अगले दिन हमें घर जाना था।

तुम्हारा अपना
दक्ष माहेश्वरी

मेरी प्रिय दैनंदिनी!

आज मैं सुबह ४ बजे उठा। आज मैं क्योटो गया था। क्योटो जापान के यामाशीरों प्रांत में स्थित नगर है। किवामु शासन काल में इसे 'हेन-क्यो' कहा जाता था अर्थात 'शान्ति का नगर'। १९वीं शताब्दी तक क्योटो जापान की राजधानी थी। आज हम क्योटो में बाँस के जंगल और किंकुजी टेम्पल गए थे। बाँस के जंगल में चारों तरफ बाँ फैला हुआ था और बहुत ख़ूबसूरत था। फिर हम किंकुजी टेम्पले गए, वह पूरा सोने से बना हुआ है और इतना ख़ूबसूरत होने के कारण हर रोज़ लाखों लोग देखने आते हैं। आज का दिन बहुत मज़ेदार था। शुभ रात्रि !

तुम्हारा अपना
दक्ष माहेश्वरी

हिन्दी विभाग

दाएँ छोर से : श्रीमती रक्षा सीरिया, श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष), श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन-कोकरिकुलर), श्री अजय सिंह (प्राचार्य) सुश्री स्मिता चतुर्वेदी (उपप्राचार्या), श्री जगदीश जोशी, श्री गणपत स्वरूप पाठक

हिन्दी साहित्य सभा

दाएँ छोर से : विवेक सिंह (संयुक्त सचिव, वाद-विवाद), श्रीमती रक्षा सीरिया, श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष), श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन-कोकरिकुलर), श्री अजय सिंह (प्राचार्य), सुश्री स्मिता चतुर्वेदी (उपप्राचार्या), श्री जगदीश जोशी, तनिष अग्रवाल (सचिव), श्री गणपत स्वरूप पाठक, विनायक कपूर (संयुक्त सचिव, नाट्य)

छात्र संपादक मण्डल

दाएँ छोर से (पहली पंक्ति) : इदांत मेहरोत्रा (जूनियर संपादक), अविरल डालमिया (छायांकन), विवेक शर्मा (मुख्य संपादक), भावनी जैन (जूनियर संपादक), खुश तोड़ी (कार्यकारी संपादक), स्वरित वार्ष्णेय (सह संपादक)

दाएँ छोर से (दूसरी पंक्ति) : श्री अमित कुमार, श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष), श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन-कोकरिकुलर), श्री अजय सिंह (प्राचार्य), सुश्री स्मिता चतुर्वेदी (उपप्राचार्या), श्री राज कुमार कपूर (डीन-आइसीटी), श्री हसरत अली, श्री गणपत स्वरूप पाठक

कठिन डगर के राही हैं हम, तूफ़ानों के साथी हैं हम ।
भव्य अतीत से शिक्षा लेकर, स्वर्णिम कल गढ़ते है हम ।।